चन्दामामा
अक्तूबर १९८३
2 रु०

जीवन और हनु की बातचीत

भाषा के विकास संबंधी

मनुष्य ने लिखित भाषा का विकास किया इसके हजारों वर्ष पूर्व आदि मानव सीधे-सादे विचारों को गुफाओं की दीवारों पर, रेखाचित्रों तथा चित्रकला द्वारा व्यक्त करते थे. इस कला के अनेकों नमूने फ्रांस के लास्को में उपलब्ध हैं.

प्राचीन मिस्र के लोगों ने (लगभग ३००० ई.पू.) वस्तुओं और विचारों को प्रकट करने के लिए चित्रों की पद्धति को खोजा. जिसे 'हीरोग्लिफिक्स' कहा जाता है.

प्रत्येक चिन्ह बोले जाने वाले शब्दों का भी प्रतिनिधित्व करता था. इसके बाद ये चिन्ह केवल मूल शब्दों की लगभग ध्वनि दर्शाने के लिए ही प्रयोग किए जाते थे. इनके अर्थों के लिए नहीं.

यह पद्धति आज भी रेबस नाम के खेल में प्रयोग की जाती है. शब्दों को समझने के लिए चित्रों का प्रयोग किया जाता है. नीचे दिए गए रेबस में 'सॉ', 'रेस' इत्यादि का वास्तविक संदेश से कोई संबंध नहीं है. ये निम्नलिखित पंक्ति को व्यक्त करते हैं :

Someone Saw Many People Race By.

चीनी लेखन (पिक्टोग्राम के नाम से जाने जाते) का प्रारंभ इसी तरह से हुआ था. शुरू में खींची जाने वाली जटिल रेखाएं केवल वस्तुओं और विचारों को दर्शाने वाले चित्र मात्र थे.

मिस्र की लेखन पद्धति की तरह ये चिन्ह भी शुद्ध ध्वनि दर्शाने के लिए प्रयोग किए जाने लगे. जग से खींची जाने वाली रेखाओं का मूल अर्थ 'घूंट' था. जिसका 'ली' के रूप में उच्चारण किया जाता था. इस समानता को ध्यान रखो. भाषा का विकास हुआ और धीरे-धीरे इसके अर्थ को भुलाकर 'ली' का चिन्ह ध्वनि के लिए प्रयोग किया जाने लगा.

आज तो लगभग सभी भाषाओं की वर्णमालाएं हैं. और प्रत्येक वर्ण एक निश्चित उच्चारण के लिए प्रयोग किया जाता है. सबसे प्रारंभिक भारतीय वर्णमाला को ब्राह्मी लिपि कहा जाता है. पर आज भी चित्रों का प्रयोग होता है. यदि यातायात संकेत चिन्हों को आप गौर से देखेंगे तो स्वयं जान जाएंगे !

चन्दामामा
अपनी विरासत जानिए
प्रतियोगिता

प्रविष्टियाँ आ चुकी हैं!

एक लाख से भी अधिक प्रविष्टियाँ प्राप्त हुई हैं। इस उत्साहपूर्ण सहयोग के लिए धन्यवाद! पुरस्कारों के लिए कन्धा-दौड़ शुरू हो गई है।

शायद इस अंक में आप इसका नतीज़ा देखना चाहते। लेकिन प्रविष्टियों की संख्या इतनी अधिक है कि उनकी छँटाई में आशा से अधिक समय लग गया है।

हमारे निर्णायकगण इसमें लगे हुए हैं। हम अगले अंक में इसका नतीज़ा अवश्य प्रकाशित करेंगे।

कृपया तबतक हमारे साथ सहन करें।
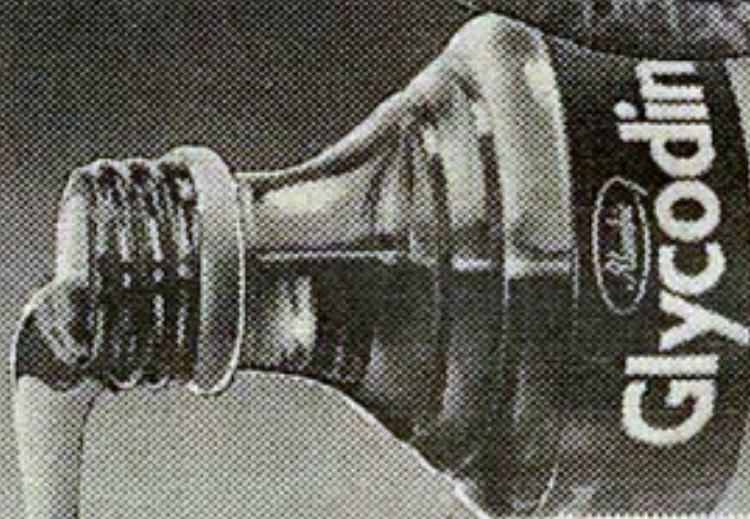
चन्दामामा

संस्थापक: 'चक्रपाणी'
संचालक: नागिरेड्डी

अधिकार का निर्वाह अत्यंत उत्तर दायित्व पूर्ण होता है ! यदि किसी कारणवश दुष्ट व्यक्ति के हाथ में अधिकार आ जाता है तो उसके द्वारा होने वाली हानियों की चर्चा प्राचीन ग्रंथों में सूक्तियों के रूप में हुई है । "अधिकार का दुरुपयोग" नामक कहानी में ऐसे ही एक अधिकारी के दुष्ट व्यवहार का चित्रण बड़ी खूबी के साथ हुआ है ।

अमरवाणी

अतीत्य स्वार्हतां कोपि, लभते नाधिकम् फलं ।
स्वल्प मेवांबु लभते, प्रस्थः प्राप्यापि सागरं ॥

[किसी भी व्यक्ति को अपनी अर्हता से अधिक फल प्राप्त नहीं होता ! घड़ा यदि महा सागर के पास भी चला जाता है, उसे घडे भर जल ही प्राप्त होता है, उस से अधिक नहीं प्राप्त होता]

वर्ष : ३६ | अक्तूबर १९८३ | अंक : २

एक प्रति : २-०० :: वार्षिक चन्दा : २४-००

चन्दामामा-विशेष संवाद

जीव-जन्तु-ध्वनि-संग्रहालय

मास्को विश्वविद्यालय के प्राणिशास्त्र विभाग ने अभी कुछ दिनों पूर्व ही तीन हज़ार से अधिक जीव-जन्तुओं की ध्वनि का रिकार्ड किया है।

पशु-पक्षी तथा कीट-कृमियों की आवाज़ के संग्रह से भला क्या लाभ ? कुछ लोग ऐसा प्रश्न कर सकते हैं।

वैद्यों का कहना है कि अनिद्रा के रोगियों के इलाज में यह बहुत ही लाभकारी साबित हुई है। इसके अतिरिक्त ये ध्वनियाँ मानव-मस्तिष्क को भी प्रभावित करती हैं।

कभी न घटनेवाला सूर्य-गोला

वैज्ञानिक अनुसंधान से यह साबित हो चुका है कि सूर्य का गोला अपनी ज्वलन शक्ति के लिए लगभग प्रति सेकेण्ड अपने भीतर से चालीस लाख टन पदार्थ का उपयोग करता है। इस हिसाब से अगले छः लाख करोड़ वर्षों में सूर्य-गोला अपने भीतर से केवल एक सौ चालीस हजारवें हिस्से का पदार्थ ही इस्तेमाल कर सकेगा। इस प्रकार हम कह सकते हैं कि यह सूर्य का गोला कभी नहीं खत्म होगा।

एक शिशु का जन्म

क्या एक शिशु का जन्म एक विशेष संवाद है ?

जी हाँ ! हो सकता है यदि वह राजा के महल में जन्म ले।

लेकिन यह शिशु ऐसा कुछ नहीं है। कहा जाता है कि अण्डमान टापू के छोटे-छोटे जंगलों में गुफाएं जैसी झोंपड़ियाँ बना कर ओनजेस नाम की एक जंगली जाति रहती है। इस जाति के लोग धीरे-धीरे समाप्त होते जा रहे हैं और अब उनकी कुल जनसंख्या सत्तानवे रह गयी है। उसी जाति में अभी एक शिशु ने जन्म लिया है, जिससे उनकी संख्या बढ़ कर अट्ठानवे हो गयी है।

क्या आप जानते हैं ?

१. भारत में आनेवाला प्रथम यूनानी राजदूत कौन था ? और उसे किस यूनानी राजा ने भेजा था ?

२. फारस के किस राजा ने भारत पर विजय पाने का असफल प्रयास किया ?

३. फारस के किस राजा ने भारत के एक छोटे से भूभाग को अपने राज्य में मिला लिया था ?

४. पूर्वी समुद्र तट पर ईस्ट इण्डिया कम्पनी द्वारा निर्मित दो दुर्ग कहाँ-कहाँ हैं और उनके नाम क्या हैं ?

५. इतिहास का एक महान विजेता बिल्ली के नाम से डरता था ! क्या नाम था उसका भला ?

(उत्तर ६४ वें पृष्ठ पर देखें)

आग लगे तब खोदे कुआँ

किसी गाँव में एक जमीन्दार रहता था। वह दिल का बहुत उदार और अच्छे स्वभाव का था। किन्तु किसी भी काम को करने में वह जरूरत से अधिक विलम्ब कर देता। जब काम का ऐन वक्त आ जाता तो वे जनाब उसकी तैयारी शुरू करते ! लेकिन उन्हें एक आदत और थी। खामखाह वे दूसरों के काम को अपने सिर पर ले लेते और इस तरह दूसरों को भी अपने साथ ले डूबते ।

इनकी इस आदत से सबसे अधिक परेशान था इनका बड़ा विश्वासी नौकर-रघुवीर ! यों जमीन्दार रघुवीर को अच्छा वेतन देते थे और इसे तथा इसके परिवार को अपने परिवार के समान मानते थे। फिर भी रघुवीर को उनके साथ काम करना बहुत कठिन और कष्टदायक लगता। कारण वही था- ज़मीन्दार का आलसी स्वभाव और हर काम में जरूरत से ज्यादा विलम्ब करने की आदत ।

एक बार की घटना यों हुई। उसी गाँव के सोम ठाकुर नामक किसान की कन्या का विवाह निश्चित हुआ। इस विवाह में जमीन्दार साहेब ने पंडाल बनाने की जिम्मेदारी अपने ऊपर ले ली।

विवाह का दिन निकट आ गया, किन्तु पंडाल के बारे में जमीन्दार ने रघुवीर को अभी तक कुछ भी करने को नहीं कहा था। जमीन्दार साहेब का सारा काम-काज रघुवीर ही देखता था इसलिए सोम ठाकुर ने कई बार रघुवीर को पंडाल बनाने की याद दिलाई। रघुवीर ने उसी तरह जमीन्दार साहेब को कई बार याद दिलाया। किन्तु वे हर बार रघुवीर को यह डाँट कर चुप कर देते कि "अभी हड़बड़ क्या है ? विवाह में अभी भी एक-दो दिन हैं !"

अन्त में विवाह का दिन भी आ गया, किन्तु पंडाल तैयार नहीं हुआ। रघुवीर बहुत परेशानी की हालत में जमीन्दार से बोला, लेकिन वे बड़े इत्मिनान से बोले- "अरे घबराने से काम नहीं

जयदेव शर्मा

होता । बारात तो अभी आई नहीं !"

आखिरकार जब बारात जनवासे में पहुँच गयी, तब जमीन्दार ने रघुवीर को पंडाल बनवाने के लिए आवश्यक आदेश दिये । बारात वाले सोम ठाकुर को अपमानित कर रहे थे । सोम ठाकुर लज्जित हो समझाने की कोशिश कर रहा था- "आप लोग विलम्ब के लिए क्षमा करें। दरअसल इस काम की जिम्मेवारी गाँव के जमीन्दार ने खुद अपने ऊपर ले ली थी । वे स्वभाव के बहुत सज्जन हैं लेकिन उन्हें आज का काम कल पर टालने की आदत है । इसलिए ऐसा हुआ । मैं खुद करता तो वे नाराज़ हो जाते और मेरा यहाँ रहना दूभर कर देते ।"

इस घटना में रघुवीर का कोई दोष नहीं था, लेकिन सभी लोग रघुवीर को ही दोषी ठहराते । क्यों कि सब को मालूम था कि काम तो रघुवीर ही करता है, इस बात से रघुवीर को बहुत कष्ट होता और इस नौकरी को छोड़कर कहीं और चले जाने लिए सोचता रहता । लेकिन जमीन्दार तो अच्छी तरह जानते थे कि उसकी इज्जत रघुवीर के कारण ही बच रही है इसीलिए वे रघुवीर को जाने नहीं देते ।

एक बार जमीन्दार साहेब को यह समाचार मिला कि राजा साहब पड़ोसी गाँव से होते हुए शिकार खेलने जा रहे हैं । इस पर जमीन्दार ने रघुवीर को आदेश दिया कि वह अपने गाँव में राजा के ठहरने का उचित प्रबन्ध करे ।

"मालिक ! अच्छा हो यदि यह जिम्मेदारी आप अपने ऊपर न लें । मैंने सुना है कि राजा बहुत क्रोधी हैं । यदि हमारे इन्तजाम में भूल-चूक हो गई तो राजा हम दोनों को फाँसी पर चढ़ा देंगे ।" रघुवीर ने सलाह दी ।

जमीन्दार ने गुस्से में कहा- "हमारे इन्तजाम में भूल-चूक क्यों होगी ?" रघुवीर डर से यह बोल न सका कि जमीन्दार की कल पर काम टालने की आदत से समय पर इन्तजाम होने में सन्देह है । इसलिए वह चुपचाप रह गया ।

राजा को जमीन्दार ने यह प्रार्थना भेज दी कि हमारे गाँव में भी एक दिन अवश्य पधारें। राजा की ओर से स्वीकृति भी आ गई । जब रघुवीर को यह मालूम हुआ तो उसका हृदय काँप

उठा। उसने सोचा कि जमीन्दार अपनी आदत से बाज नहीं आयेगा और राजा का अपमान हो. जायेगा। फिर राजा छोड़ेगा नहीं। हमारी तो फाँसी निश्चित है।

जमीन्दार का एक साला था। वह भी जमीन्दार की आदत से परिचित था। उसने अपनी बहन से कहा- "बहनोई साहब ने राजा को अपने गाँव में आमंत्रित कर अपनी जान पर खेला है। परन्तु अब जो हो गया सो हो गया। मैं कुछ ऐसा उपाय करता हूँ कि जमीन्दार साहब को कोई आँच न आये।"

साले ने राज दरबार में जाकर कुछ कर्मचारियों से मित्रता कर ली और उनसे कहा- "हमारे बहनोई जमीन्दार साहेब ने सारा काम अपने नौकर रघुवीर पर छोड़ रखा है। इसलिए राजा के सेवा-सत्कार में यदि कोई त्रुटि रह जाये तो रघुवीर की ही लापरवाही समझिए। यह बात राजा के कान तक पहुँच जाये तो बड़ी कृपा होगी।" उनके मित्रों ने ऐसा ही किया।

रघुवीर को जो शक था, वही हुआ। राजा के पधारने का समय हो गया लेकिन उनके लिए विश्राम भवन का प्रबन्ध अभी पूरा न हो पाया था। रघुवीर डरते-डरते सारा इन्तज़ाम कर ही रहा था कि राजा का एक सेवक आकर बोला- "राजा शिकार खेलते समय जंगल में घायल हो गये हैं, इसलिए अब वे यहाँ अगले दिन आयेंगे।" यह सुन कर रघुवीर की जान में जान

आई। उसने आराम से अगले दिन तक विश्राम भवन का बहुत अच्छा प्रबन्ध कर दिया। दूसरे दिन राजा ने प्रबन्ध की बड़ी प्रशंसा की।

राजा के सेवकों ने राजा के भोजन के लिए एक लम्बी सूची दी। जमीन्दार साहब के रसोइए ने उसी के अनुसार भोजन तैयार किया। रसोइए को बाद में पता चला कि राजा के भोजन में डालने के लिए अभी तक केसर नहीं आया। इधर भोजन का समय हो रहा था और उधर गाँव भर में कहीं भी केसर मिला नहीं। रघुवीर ने पड़ोसी गाँव में केसर के लिए एक सेवक को दौड़ा दिया।

तभी राजा ने जमीन्दार साहेब के पास यह सन्देश भेजा कि जंगल में घायल हो जाने के

कारण राज वैद्य ने उन्हें बिना केसर के ही भोजन करने की सलाह दी है। यदि केसर के साथ भोजन बन गया हो तो दूसरा भोजन बना दिया जाये, चाहे थोड़ी देर ही क्यों न हो जाये।

यह सन्देश मिलते ही रघुवीर की बाछें खिल गईं। बिना केसर के भोजन तैयार था ही, समय पर परोस दिया गया। राजा को जमीन्दार की फुर्ती पर बहुत आश्चर्य हुआ और प्रसन्नता भी! उन्होंने उत्तम प्रबन्ध, सेवा-सत्कार और तत्परता के लिए जमीन्दार की खूब सराहना की।

दूसरे दिन जाते समय राजा ने खुश होकर, उस गाँव के लिए कई सुविधाएँ प्रदान करने का वचन दिया। इसके बाद उसने रघुवीर से उसकी प्रशंसा करते हुए कहा- "तुम जैसे योग्य व्यक्ति को पाकर जमीन्दार और गाँव के लोग धन्य हैं।" इस घटना के बाद गाँव में रघुवीर की साख पहले से बहुत बढ़ गई। वह राजा के आदर का पात्र बन गया था, इसलिए गाँव के लोग भी उसका आदर करने लगे।

जमीन्दार ने भी उसकी प्रशंसा करते हुए कहा- "आज तक तो मैं तुम्हें अपने बेटे के समान मानता रहा हूँ लेकिन अब तो तुम्हें अपना बेटा ही मानता हूँ।"

जमीन्दार की इन प्यार भरी बातों से भी रघुवीर खुश न हुआ। बल्कि दुखी होकर बोला- "मालिक! मैं अब आप के पास नहीं रहना चाहता। जब स्वयं राजा के आने पर भी आप की 'कल-कल' की नीति नहीं गई तो अब आप का बदलना सम्भव नहीं। इस बार तो भगवान ने हमें बाल-बाल बचा लिया लेकिन हर बार ऐसा नहीं होगा।"

यह उत्तर सुनकर जमीन्दार हँसते हुए बोले- "जानते हो कि गाँव के सभी बड़े लोगों के सामने राजा ने हमारे प्रबन्ध और सेवा सत्कार के लिए तुम्हारी प्रशंसा की है। उनके सेवकों ने मेरी विलम्ब की आदत के बारे में राजा को बता दिया है। उन्होंने मुझे इस बात के लिए सख्त चेतावनी भी दी है। उनकी चेतावनी न मान कर भला मृत्यु का खतरा कौन मोल लेगा?"

रघुवीर यह सोच कर जमीन्दार की बात मान गया कि इन्होंने अपनी गलती मान ली है तो अवश्य सुधर जायेंगे।

[पद्मपाद ने पिंगल को भल्लूक केतु के माया-जाल से बचाया। इसके बाद वे दोनों भल्लूक पर्वतों की ओर चल पड़े। रास्ते में धुएं के रूप में विचरण करने वाले पिशाचों ने इन्हें रोकने की कोशिश की, किन्तु पद्मपाद की तंत्रशक्ति और पिंगल के साहस के सामने उनकी एक न चली। इसके बाद भल्लूक पर्वतों की घाटी में एक नदी किनारे महामाय के शिष्य पद्मपाद को सहायता देने का वचन देकर अदृश्य हो गये।]

महामाय के दोनों शिष्यों को अपनी आँखों के सामने से अदृश्य होते देख पिंगल आश्चर्य और भय से काँप गया। अपनी शंका प्रकट करते हुए उन्होंने पद्मपाद से कहा-

"पद्मपाद ! वे दोनों इस तरह गायब होकर फिर से मगरमच्छ बन कर नदी में प्रवेश तो नहीं कर जायेंगे !"

"मगरमच्छ बन कर फिर से..." पद्मपाद चौंक पड़ा। लेकिन तुरंत संभल कर मुस्कुराता हुआ बोला-

"पिंगल ! यदि सचमुच ऐसा हो जाये तो कहानी उलटी हो जायेगी। तुम तो जानते ही हो कि उन दोनों पर कब्ज़ा करने के लिए मेरे दोनों बड़े भाई अपने प्रणों से हाथ धो बैठे। मैं उनके चंगुल से बाल-बाल बच गया।"

"तो फिर वे इस वक्त कहाँ गये ?" पिंगल ने उत्सुकता प्रकट की।

पद्मपाद ने पिंगल को समझाते हुए कहा-

"घबराओ नहीं । यह कोई अधिक महत्व की बात नहीं है कि वे कहाँ और किस रूप में हैं । अभी महत्व की बात तो यह है कि हमें इसी नदी के गर्भ में स्थित शिथिल मन्दिर में प्रवेश करना होगा । उस मन्दिर के पाँच द्वारों को खोलने पर ही हम महामाय की समाधि वाले कमरे में पहुँच सकते हैं । इस काम में वे दोनों हमारी सहायता करेंगे ।"

"मैं अच्छी तरह तैरना नहीं जानता । इस हालत में नदी के गर्भ में स्थित मन्दिर तक मैं कैसे पहुँच पाऊँगा ?"

पिंगल ने फिर अपनी शंका प्रकट की ।

यह सवाल सुन कर पद्मपाद हँस पड़ा । फिर बोला- "तुम्हें बिलकुल भी तैरना न आये तब भी कोई बात नहीं । निड़रता और साहस काफ़
है ।

"पहले हमें यह कोशिश करनी होगी वि
नदी का जल सूख जाये । इस काम में महामा
के दोनों शिष्य हमारी सहायता अवश्य करेंगे ।"

पिंगल ने फिर आश्चर्य से पूछा- "इस गह
नदी का अथाह जल कैसे सुखा सकते हैं ?"

"लेकिन ऐसा किये बिना हम अपने कार्य मे
सफल नहीं हो सकते ।

"मैं अभी-अभी इसी काम में लगने जा रह
हूँ । यह काम मंत्र शक्ति से होगा । मैं मंत्र वे
जाप में ध्यान लगा कर बैठूँगा और तुम दु
शक्तियों से मेरी और मंत्र के उपचार की रक्ष
करना ।" पद्मपाद ने पिंगल को समझाते हु
कहा ।

"तुम्हारी रक्षा मैं..."

पिंगल को पद्मपाद की हर बात चकित क
रही थी । चप्पे-चप्पे पर मौत के खतरे को फूल
की तरह रौंदता हुआ जो महान तांत्रिक अपन
मंज़िल की ओर बढ़ता जा रहा था, पिंगल जैस
मछुआरा उसकी कैसे रक्षा कर सकता है
पिंगल को यह सचमुच समझ में नहीं आ रह
था ।

लेकिन पद्मपाद जानता था कि पिंगल वे
बिना वह मंज़िल तक नहीं पहुँच पायेगा
इसलिए उसने पिंगल का हौसला बढ़ाते हुए
कहा-

"हाँ, हाँ, मेरी रक्षा तुम्ही को करनी होगी

जब मैं मंत्राचार में लीन रहूँगा तब मुझे पता नहीं चलेगा कि वातावरण में क्या हो रहा है। उस समय तुम बाहरी खतरों से अपनी और मेरी भी रक्षा करोगे। लो ! इस काम में यह गदा तुम्हारी सहायता करेगा।"

इतना कहते हुए पद्मपाद ने हवा में हाथ घुमाया और एक दिव्य गदा लेकर पिंगल की ओर बढ़ा दिया।

हाथ में गदा आते ही पिंगल का आत्म-विश्वास मानो कई गुना बढ़ गया। उसने एक बार गदा को हवा में घुमा कर कन्धे पर इस प्रकार रखा जैसे वह भीम हो।

पद्मपाद ने अपनी बात पूरी करते हुए कहा-

"पिंगल ! अब मैं मंत्राचार प्रारम्भ करने जा रहा हूँ। जो मायावी पिशाच तरह-तरह के रूप धर कर मुझे और तुम्हें मारने आयेंगे, उनसे निबटना अब सिर्फ़ तेरी जिम्मेदारी है। मैं अब इस नदी के जल को सुखाने के लिए मंत्र क्रिया शुरू कर रहा हूँ।"

पिंगल ने बड़े उत्साह और विश्वास के साथ कहा-

"अच्छी बात है ! मैं इस दैवी गदा के बल से साक्षात् यमराज को भी भगा दूँगा। आप निश्चिन्त होकर अपना काम प्रारम्भ करें।"

इसके बाद पद्मपाद नदी किनारे पद्मासन पर बैठ गया और नदी के जल को तीन बार चीर कर मंत्रोच्चार करने लगा- "जल सर्व स्तम्भनम्...कुरु कुरु...

शीघ्रं वश्यं... ईः ईः..."

मंत्र पढ़ते-पढ़ते पद्मपाद की आँखें बन्द हो गयीं।

तभी आसमान को चीरती हुई एक भयंकर आवाज़ सुनाई पड़ी। पिंगल उस घोर गर्जन को सुन कर चौंक पड़ा और हाथ में गदा लेकर घुमाने लगा।

पिंगल ने देखा कि देखते-देखते सारा आकाश काले-काले मेघों से छा गया और वह काला आसमानन धीरे-धीरे उसके क़रीब आने लगा। निकट आते-आते सारा आसमान एक हाथी के आकार में सिमट गया। हाथी का आकार देखते ही पिंगल समझ गया कि यह भी कोई मायावी राक्षस है और उस पर आक्रमण

करने के लिए अपनी गदा संभाल ली। लेकिन दूसरे ही क्षण उस मायावी हाथी ने एक विशाल पक्षी का रूप धारण कर लिया, और अपने बड़े-बड़े दोनों डैने फड़फड़ाने लगा।

"यह शायद कोई पिशाच गण्ड-भेरुण्ड पक्षी है।" पिंगल ने मन ही मन कहा।

उस पिशाच पक्षी के पंखों की फड़फड़ाहट से जोरों से आँधी उठने लगी और पेड़-पौधे उखड़ने लगे।

वह विशाल दानव-पक्षी पिंगल की ओर इस प्रकार बढ़ता आ रहा था जैसे बाज़ चूज़े पर झपट रहा हो। उस विकराल पक्षी की बाँस भर लम्बी नाक, तेज चाकू जैसे नाखून और उसकी आग उगलने वाली आँखों को देखकर भी पिंगल घबराया नहीं क्यों कि उसे विश्वास थ
कि उसकी मायवी गदा उसे हर खतरे से बच
सकती है। इसलिए उसने अपनी गदा क
संभाल कर पकड़ लिया और आक्रमण के लि
तैयार हो गया। लेकिन उसके पंखों की गति
उठने वाली आँधी का वेग पिंगल संभाल
सका और वह दूर जा गिरा। उसी समय पक्ष
उसके बहुत निकट आ गया और अपनी बह
जैसी चोंच से उसने पिंगल पर प्रहार किया
पिंगल ने अपने को संभालते हुए अपनी पू
ताक़त लगा कर गदा से पक्षी पर प्रहार क
दिया, किन्तु इस प्रहार से पक्षी बच निकला औ
विचित्र कोलाहल करता हुआ आकाश में उ
गया।

पिंगल इस बार अधिक सावधान हो गया
उसे पहले अनुमान न था कि उसकी गति
आँधी से भी अधिक वेग होगा, इसीलिऐ व
अपना सन्तुलन खो बैठा था। पक्षी इस बा
अधिक तेजी से झपटने आ रहा है, यह दे
उसने अपनी पूरी शक्ति लगा कर अपने पाँ
जमा दिये और प्रहार करने के लिए गदा क
संभाल लिया। पक्षी ही उस पर झपटा, पिंगल
ने लक्ष्य करके उसके सर पर गदा का प्रहार क
दिया। गदा की चोट लगते ही भारी आवाज़ के
साथ पक्षी के कई टुकड़े इधर-उधर बिखर क
धरती पर गिर पड़े।

इस दृश्य को देख कर पिंगल खुशी से झूम
उठा और पद्मपाद की जय-जय कार करत

हुआ, गदा को हवा में उछालता, खुद भी उछलने लगा ।

पद्मपाद अब भी निश्चल ध्यान मग्न था । उसकी आँखें बन्द थीं । उसके होठ कभी-कभी हिल उठते थे । पिंगल को इस बात का भारी सन्तोष था कि इतना शोर होने पर भी पद्मपाद का ध्यान भंग नहीं हुआ ।

पिंगल यह सब सोच ही रहा था कि उसके कानों में एक अद्भुत स्वर्गीय संगीत लहराने लगा । पायल की झनकार, कोकिल कण्ठ और वाद्य यंत्रों का अद्भुत तालमेल ! इस संगीत में ऐसा जादू था जैसे पत्थर भी पिघल कर पानी हो जायेगा ।

पिंगल थोड़ी देर तक सुध-बुध खोकर संगीत सुनता रहा । उसे फिर याद आया कि इस वन प्रदेश में ऐसा मोहक संगीत कहाँ से आ रहा है । तभी उसे सामने एक रूपवती नर्तकी दिखाई पड़ी । वह एक हल्की मुस्कान के साथ थिरकती-नाचती पिंगल की ओर बढ़ी आ रही थी ।

"पिगल ! मैं तुम्हारे सौन्दर्य पर मुग्ध हूँ । क्या तुम मेरे साथ विवाह करोगे ? मैं तुम्हें दुनिया की हर दौलत से मालामाल कर दूँगी ।" उस सुन्दरी ने पिंगल के पास आकर अनुरोध किया ।

पिंगल को उस सुनसान स्थान में अचानक एक सुन्दर नर्तकी को देख कर समझने में देर न लगी कि यह पिशाचों की माया है । वह संभल

कर बोला-

"क्या तुम सचमुच मेरे सौन्दर्य पर मुग्ध हो ? शायद तुम इस भ्रम में पड़ गई हो कि मैं किसी राजा-महाराजा का पुत्र हूँ । मैं तो एक मछुआरा हूँ और मेरा नाम पिंगल है । भला मछुआरे से विवाह करने में तुम्हें क्या मिलेगा ?"

"मछुआरा हुए तो क्या हुआ ? तुम्हारी सुन्दरता तो तीनों लोकों में न्यारी है ।" यह कहती हुई वह माया की सुन्दरी पिंगल के चारों ओर नृत्य करने लगी ।

पिंगल उस सुन्दरी से अपनी शंका प्रकट करता हुआ बोला- "तुम्हारे गीत के साथ अद्भुत संगीत का स्वर कहाँ से आ रहा है ? इसके साज़

और वादक कहीं दिखाई नहीं देते !"

इस पर सुन्दरी ने कहा- "मैं खेचरी हूँ। मेरे साथ विवाह करोगे तभी तुम उन सब चीज़ों को देख सकोगे।"

"तो तुम आकाश में विचरण करने-वाली गन्धर्वबाला हो ?" इतना कह कर पिंगल अपनी गदा लेकर सुन्दरी के निकट आने लगा।

गदा के साथ अपनी ओर बढ़ते देख नर्तकी डरती हुई बोली- "पिंगल ! उस गदा को दूर फेंक दो। मैं हथियार और लड़ाई-भिड़ाई पसन्द नहीं करती।" इतना कहती हुई वह पीछे हटने लगी।

पिंगल को अब पूरा विश्वास हो गया था कि यह माया सुन्दरी कोई पिशाचिनी है और पद्मपाद का ध्यान भंग करने आई है। पिंगल को उस पर क्रोध आ रहा था, फिर भी वह क्रोध को छिपाता हुआ उसके पास आकर प्रेम दिखाता हुआ बोला-

"हे खेचर कान्ता मणि ! तुम्हारे साथ विवाह करने में मुझे कोई आपत्ति नहीं है। किन्तु इस समय यहाँ पर मुझे पाल-पोस कर बड़ा करनेवाली मेरी पर दादी मौजूद नहीं है, इस बात का मुझे दुख है। फिर भी, कोई बात नहीं। यदि तुम मेरे परिवार की परम्परा के अनुसार विवाह के पूर्व अपने सिर पर गदा-प्रहार करने दो तो मैं खुशी से विवाह करने को तैयार हूँ।"

इतना कह कर पिंगल ने सुन्दरी के सिर पर गदा से प्रहार किया। गदा का स्पर्श होते ही वह सुन्दरी एक विकराल पिशाचिनी में बदल गई और फिर कई टुकड़ों में बिखर कर अदृश्य हो गई।

पिंगल अपनी सफलता पर झूम उठा। वह अपनी पीठ ठोंकता हुआ चिल्ला उठा-

"वाह रे पिंगल ! तू ने आज दो-दो पिशाचों का मुक़ाबला अकेले किया है।"

तभी उसका ध्यान नदी की ओर गया। नदी का जल तेजी से सूख रहा था। यह देख कर वह खुशी से और भी पागल हो उठा। पद्मपाद की कोशिश सफल हुई, यह कहने के लिए वह पद्मपाद की ओर मुड़ा।

पद्मपाद का ध्यान टूट चुका था। उसकी आँखें धीरे-धीरे खुल रही थीं। तभी पिंगल खुशी से चिल्ला उठा-

"देखो पद्मपाद ! नदी का जल कैसे सूखता जा रहा है ! जलचर प्राणी अपनी रक्षा के लिए किस प्रकार इधर-उधर भाग रहे हैं !"

"शाबाश ! महामाय के शिष्यों ने अपने वचन का पालन किया। लेकिन इसके गर्भ में स्थित शिथिल मन्दिर अभी तक दिखाई नहीं दे रहा है !"

तभी नदी की बीच धारा में कोई चीज़ ऊपर उठती हुई नज़र आई।

"लो देखो ! शायद यही है मन्दिर का मस्तूल। क्या इसी मन्दिर में महामाय की समाधि है ?" पिंगल ने मन्दिर की ओर संकेत हुए कहा।

सन्तोष और खुशी से लम्बी सांस खींचते हुए पद्मपाद ने कहा- "हाँ, हाँ, यही है वह मन्दिर। इसी में है महामाय की समाधि ! जब नदी का सारा जल सूख जायेगा, तब महामाय के दोनों शिष्य हमारे पास आ जायेंगे।"

फिर पद्मपाद ने पिंगल से पूछा- "अच्छा पिंगल ! यह बताओ, जब मैं ध्यान में था तब किसी पिशाच ने बाधा पहुँचाने की कोशिश तो नहीं की ?"

पिंगल ने बड़े गर्व के साथ गण्ड भेरुण्ड पक्षी तथा मायावी नर्तकी के विनाश और अपनी बहादुरी और बुद्धिमानी की कहानी सुनाई।

पद्मपाद पिंगल की बहादुरी, बुद्धिमानी और साहस को देख कर बहुत प्रसन्न हुआ। उसने पिंगल की पीठ थपथपाते हुए कहा- "पिंगल ! उस मायावी सुन्दरी के जाल से तुम बच निकले, यह तुमने सचमुच बड़ी बहादुरी का काम किया है ! जब तुम मन्दिर में प्रवेश करोगे, तब ऐसी कुछ और परीक्षाओं का सामना करना पड़ेगा तथा बहुत सावधानी रखने की जरूरत पडेगी।"

अब तक नदी का सारा जल सूख चुका था। मन्दिर का पूरा भाग दिखाई देने लगा था। मंदिर के आगे महामाय के दोनों शिष्य पुकार रहे थे-हे महामांत्रिक !

हार की जीत

दृढ़व्रती विक्रम पेड़ के पास लौट आये। फिर उन्होंने पेड़ पर से शव उतार कर उसे कन्धे पर रखा तथा हमेशा की तरह चुपचाप वे श्मशान की ओर जाने लगे। तब शव के अन्दर निवास करने वाले बेताल ने कहा- "राजन। मुझे समझ में नहीं आता कि इस आधी रात के वक्त इतने कष्ट झेल कर भी आप क्या प्राप्त करना चाहते हैं ? कई ऐसे साधारण वीर होते हैं जो अपने को असाधारण समझ कर अपनी शक्ति से भी बड़ा कार्य हाथ में ले लेते हैं, पर अन्त में असफल हो जाते हैं। मेरी समझ में आप भी वैसे ही लोगों में से एक हैं। उदाहरण के लिए मैं आप को शूरसेन और सुवीर की कहानी सुनाता हूँ। रास्ते की थकावट को भुलाने के लिए ध्यान से सुनिए।"

बेताल ने विक्रम को फिर कहानी इस प्रकार सुनाई- "भद्रगिरि का राजकुमार शूरसेन सोलह वर्ष की छोटी अवस्था में ही युद्ध की सभी

बेतालकथा

कलाओं में निपुण हो गया था। फिर भी उन कलाओं का अभ्यास बराबर किया करता। वास्तव में, वह दुनिया का सबसे बड़ा योद्धा बनने का स्वप्न देखता था।

"एक दिन घूमते हुए स्वामी अधर्वण भद्रगिरि में पधारे। राजा ने उनका यथोचित स्वागत-सत्कार किया।

"स्वामी अधर्वण स्वयं एक कुशल योद्धा के साथ-साथ युद्ध की सभी कलाओं के पारखी थे। इन कलाओं के शान्ति पूर्ण प्रदर्शन देखने में इन्हें बड़ा आनन्द आता था। इसलिए शूरसेन ने स्वामी अधर्वण के सामने अपनी विद्या का प्रदर्शन करके पूछा- "स्वामि ! आप सभी राज्यों में घूमते रहते हैं ! क्या आपने कहीं मुझसे बड़ा योद्धा या इस विद्या में मुझसे अधिक निपुण व्यक्ति देखा है ?"

"शूरसेन का प्रश्न सुन कर स्वामी अधर्वण मुस्कुरा कर बोले- "तुम्हारी कला प्रशंसा के योग्य है, इसमें कोई संन्देह नहीं, लेकिन मैं नहीं कह सकता कि सुवीर की समता तुम कर सकोगे या नहीं।

"तुमने यह विद्या निरन्तर अभ्यास के द्वारा सीखी है, किन्तु सुवीर ने बिना किसी अभ्यास के तथा बिना किसी गुरु के सहज और स्वाभाविक रूप से यह विद्या प्राप्त की है। वह बहुत ही शान्त स्वभाव का युवक है, वह अकारण किसी के साथ लड़ाई-झगड़ा नहीं करता। केवल अपनी ताक़त दिखाने के लिए वह किसी से युद्ध करना भी पसन्द नहीं करता। वह तुम्हारे ही राज्य में एक गाँव का रहनेवाला है।"

इतना कहते हुए स्वामी अधर्वण ने शूरसेन को सुवीर का परिचय दिया।

"स्वामी अधर्वण के चले जाने के बाद शूरसेन, अपने पिता से आज्ञा लेकर, एक साधारण नागरिक के वेश में सुवीर से मिलने चल पड़ा।

"सुवीर एक गाँव के खपरैल मकान में रहता था। वह एक गरीब और सीधा-सादा युवक था। उसके माता-पिता का देहान्त हो चुका था। वह हर रोज जंगल में जाकर लकड़ियाँ काटता और उन्हें बेचकर अपना पेट पालता। उसे देख कर कोई नहीं समझ सकता

था कि वह देश का एक महान योद्धा और वीर है। लेकिन उसकी वीरता की कई कहानियाँ आस-पास के गाँवों में प्रचलित हो गयी थीं।

एक दिन अर्ध रात्रि के समय दस डाकू उसके गाँव को लूटने आये। सुवीर ने अकेले ही उनका सामना किया और उन सबको पकड़ कर सिपाहियों को सौंप दिया।

"एक बार वह जंगल में अकेले जा रहा था। अचानक उस पर एक शेर झपट पड़ा। सुवीर ने उसे मुक्कों से मार-मार कर कचूमर निकाल दिया। फिर अपने कन्धे पर लाद कर बच्चों के खेलने के लिए अपने गाँव ले आया।

"शूरसेन यह जानने के लिए बेचैन था कि सुवीर और उसमें कौन बड़ा वीर है, इसलिए वह उससे युद्ध करने का अवसर ढूंढ रहा था। शूरसेन यह भी जानता था कि सुवीर बिना किसी कारण के उसके साथ युद्ध नहीं करेगा। इसलिए एक रात वह चोर बन कर सुवीर के घर में घुस पड़ा। उसने जान बूझ कर किसी चीज़ को गिरा कर आवाज़ की, जिससे सुवीर जाग जाये। सुवीर को अपने घर में चोर घुसते देख आश्चर्य हुआ क्यों कि उसके घर में चोरी के लायक़ कोई भी चीज़ नहीं थी। इसीलिए उसने चोर को देख कर भी उसे पकड़ने की कोशिश नहीं की। तब शूरसेन ने ही पहले सुवीर पर आक्रमण कर दिया। सुवीर ने शीघ्र ही शूरसेन पर काबू कर लिया और उसके हाथ-पाँव बाँध दिये। शूरसेन समझ गया कि सुवीर की बीरता

के सामने वह अभी बच्चा है और स्वामी अथर्वण का सन्देह निराधार नहीं था।

"सुवीर ने शूरसेन को यह समझा कर छोड़ दिया कि चोरी करना नीच कर्म है और तुम्हें मेहनत करके पेट पालना चाहिए।"

शूरसेन ने सुवीर से कहा- "मैं यह सोच कर तुम्हारे घर चोरी करने आया था कि मेरे जैसा वीर कोई नहीं है, लेकिन यह मेरी गलतफ़हमी थी। तुम्हारी वीरता सराहनीय है।"

"सुवीर इसकी बात पर पहले हँसा, फिर बोला" "हो सकता, है, तुम मुझसे बड़े वीर हो। आज की घटना से यह कहना ठीक न होगा कि तुमसे बड़ा वीर मैं हूँ।" चोर के मन में डर रहता है और डर से शरीर और मन- दोनों का बल घट जाता है। यही कारण है कि मैंने बड़ी

आसानी से तुम पर काबू पा लिया ।

"शूरसेन को लगा कि सुवीर की बातों में काफी सचाई है । उसे एक बार फिर आशा हो गई कि सुवीर को वह हरा सकता है और राज्य भर का सबसे बड़ा योद्धा हो सकता है ।" लेकिन उसकी कठिनाई यह थी कि वह खुल्लम खुल्ला सुवीर को द्वंद्व युद्ध के लिए कैसे ललकारे। उसने सोचा कि शायद इसके साथ रहने से यह मौक़ा मिल जाये और कभी द्वंद्व युद्ध के लिए मान जाये। इसलिए उन्होंने सुवीर से अनुरोध किया- "यदि तुम मुझे कोई काम बता दो तो मैं मेहनत करने को तैयार हूँ ।"

"सुवीर ने शूरसेन को अपने साथ रख लिया तथा दूसरे दिन उसे भी जंगल से लकड़ियाँ लाने को कहा । सुवीर ने कुछ ही घण्टों में काफी लकड़ियाँ काट कर इकट्ठी कर लीं, किन्तु शूरसेन बहुत कोशिश के बावजूद एक पेड़ भी न काट सका और थक कर चूर-चूर हो धरती पर लुढ़क पड़ा ।"

शूरसेन ने अपनी कमज़ोरी का एहसास करते हुए कहा- "सचमुच मैं तुम्हारे बल का मुक़ाबला नहीं कर सकता ।"

सुवीर वीर होकर भी विनम्र था । इसलिए उसने शूरसेन का उत्साह बढ़ाते हुए कहा- "पेड़ काटने से वीरता की पहचान नहीं होती । यह काम अभ्यास का है। कुछ दिनों के बाद तुम भी मेरी तरह हो जाओगे । घबराओ नहीं ।"

"शूरसेन को फिर सुवीर की बात सही लगी और उसकी निराशा आशा में बदल गई। उसने सुवीर से कहा"- "सुना है, तुम युद्ध की सभी

कलाओं में निपुण हो ! क्या तुमने कभी किसी महा वीर के साथ युद्ध किया है ?"

"युद्ध करना मेरे स्वभाव में नहीं है। लेकिन यदि किसी को अपनी वीरता का झूठा घमण्ड हो जाये तो उसके होश ठिकाने लगाने के लिए भी मैं युद्ध कर सकता हूँ।" सुवीर ने बिना किसी गर्व के यह बात कही।

शूरसेन इसी मौक़े की तलाश में था। उसने तुरन्त कहा"- "सुनो सुवीर ! मुझे इस बात का घमण्ड है कि मेरे जैसा शूरवीर इस राज्य में कोई नहीं है। क्या तुम मेरे साथ द्वंद्व युद्ध करोगे ? या फिर यह स्वीकार करो कि मैं युद्ध कला में तुमसे बढ़ा-चढ़ा हूँ।"

"यदि बड़े लोग ऐसा गर्व करें तो पूरे समाज और देश को हानि पहुँचती है, लेकिन तुम्हारे जैसे साधारण लोग अपने घमण्ड से सिर्फ़ अपना ही नुक़सान करते हैं। इसलिए मेरे लिए तुम्हारे इस अहंकार का कोई महत्व नहीं है।" सुवीर ने कहा।

इस पर शूरसेन ने अपना परिचय देते हुए कहा- "तुम मेरे साथ महल में चलो। राजधानी में सबके सामने हम लोग अपने-अपने कौशल का प्रदर्शन कर वहाँ द्वंद्व युद्ध करेंगे। फिर इस बात की सही परीक्षा हो जायेगी कि दोनों में कौन महा वीर है।"

सुवीर को शूरसेन की डींग पर आश्चर्य हुआ। उसने गर्व के साथ कहा- "क्या तुम अब भी मानते हो कि युद्ध में मुझे पराजित कर दोगे ?"

"मैंने युद्ध कला का निरन्तर अभ्यास किया

है, जब कि तुमने ऐसा कभी नहीं किया । इसलिए मेरा विश्वास है कि तुम मुझे द्वंद्व युद्ध में कभी भी हरा न पाओगे ।'' शूरसेन ने बड़े आत्म विश्वास के साथ कहा ।

''तो मैं अभी साबित कर सकता हूँ कि तुम्हारा ऐसा सोचना कितना ग़लत है ! यह समझना तुम्हारी भूल है कि कोयल क़ो मधुर आवाज़ निकालने के लिए और शेर को अपना शिकार लाने के लिए अभ्यास की जरूरत होगी ।'' सुवीर ने शूरसेन को द्वंद्व युद्ध के लिए ललकारते हुए कहा ।

फिर उस जंगल में ही दोनों वीरों में द्वंद्व युद्ध होने लगा ।

अपनी सारी शक्ति और फुर्ती लगा कर भी शूरसेन सुवीर का मुक़ाबला न कर सका और सुवीर ने देखते-देखते उसे चारों खाने चित्त कर दिया ।

बुरी तरह हार खाने के बाद भी शूरसेन ने हार न मानी और सुवीर को खड्ग युद्ध के लिए ललकारा । सुवीर ने घर आकर उसे तलवार-युद्ध में भी बुरी तरह हरा दिया ।

बार-बार सुवीर से हार खाकर भी शूरसेन ने कहा- ''जब तक तुम राजधानी में आकर मुझे परास्त नहीं करोगे तब तक मैं यही समझूँगा कि इस राज्य भर में मैं ही सबसे महान वीर हूँ ।''

शूरसेन का गर्व तोड़ने के लिए सुवीर उसके साथ राजधानी जाने को तैयार हो गया ।

वहाँ नगर और राज्य भर के वीरों को आमंत्रित किया गया और उनके साथ सुवीर का युद्ध आयोजित किया गया । सुवीर को काफी कड़ा मुक़ाबला करना पड़ा, लेकिन युद्ध की सभी कलाओं में उसने राज्य भर के सभी प्रमुख वीरों को परास्त कर दिया ।

अन्त में सुवीर का युद्ध शूरसेन के साथ रखा गया । मल्ल विद्या, खड्ग विद्या, धनुर्विद्या, घुड़सवारी इन सब में उन दोनों का प्रदर्शन देखने योग्य था । दर्शक इन दोनों की भूरि-भूरि प्रशंसा कर रहे थे । लेकिन राजकुमार को सभी प्रदर्शनों में सुवीर से श्रेष्ठ माना गया ।

सुवीर ने अपनी हार मानते हुए शूरसेन को बधाई दी और उससे विदा माँगी ।

राजकुमार शूरसेन ने तब सुवीर को अपने हृदय से लगाते हुए कहा- ''दोस्त ! पहले

विक्रम ने उत्तर देते हुए कहा- "इसमें शूरसेन ने सुवीर पर विजय पाने के लिए कोई छल-कपट नहीं किया। हाँ! उसने यह रहस्य जरूर जान लिया कि सुवीर की अपार शक्ति का स्रोत क्या है। तभी उसने उस पर विजय प्राप्त की।"

शूरसेन ने यह देखा कि सुवीर ने युद्ध की सारी कलाएँ स्वाभाविक रूप से सीख ली हैं तुमसे बार-बार हार कर भी मेरे मन में वीरता का अहंकार बना हुआ था, लेकिन आज तुमसे जीत कर भी यह अहंकार नहीं है कि मैं ही राज्य का सबसे महान वीर हूँ क्यों कि मुझे मालूम है कि किस प्रकार मैंने जीत हासिल की है।"

उत्तर में सुवीर ने सिर्फ मुस्कुरा दिया।"

बेताल ने यह कहानी सुना कर विक्रम से कहा- "राजन्! सुवीर ने शूरसेन को कई बार हरा दिया था, लेकिन राजधानी के प्रदर्शन में उससे हार क्यों गया? क्या राजकुमार ने विजय पाने के लिए कोई छल तो नहीं किया? यदि जान कर भी इस शंका का समाधान न देंगे तो तुम्हारा सर फूट कर टुकड़े-टुकड़े हो जायेगा।"

जैसे वन के पशु सीख लेते हैं। इसलिए उनकी शक्ति भी उनके स्वाभाविक वातावरण में ही काम करती है और फलती-फूलती है।

उस सहज स्थानीय वातावरण के अभाव में शक्ति और मनोबल दोनों में कमी आ जाती है। यही कारण है कि जल के भीतर शक्तिशाली रहने वाला मगरमच्छ जल के बाहर अपने से कमजोर पशुओं से भी डरने लगता है। उसी प्रकार जंगल का राजा शेर अपने राज्य से बाहर नगर में भटक जाता है तो भय भीत होकर प्राण रक्षा के लिए इधर-उधर भागने लगता है।

"सुवीर को भी राजधानी के नगर में वह सहज वातावरण नहीं मिला जिसमें वह पला था और जहाँ उसने वातावरण से ही युद्ध की सारी कलाएं सीखी थीं। शूरसेन भी इसी कतावरण के अभाव में सुवीर के गाँव में उससे आसानी से हारता रहा। राजधानी का सारा वातावरण राजकुमार के अनुकूल था, इसीलिए सुवीर का मनोबल कमजोर पड़ गया।"

राजा के मौन होते ही बेताल शव के साथ गायब हो गया और पुनः पेड़ पर जा बैठा।

—(कल्पित)
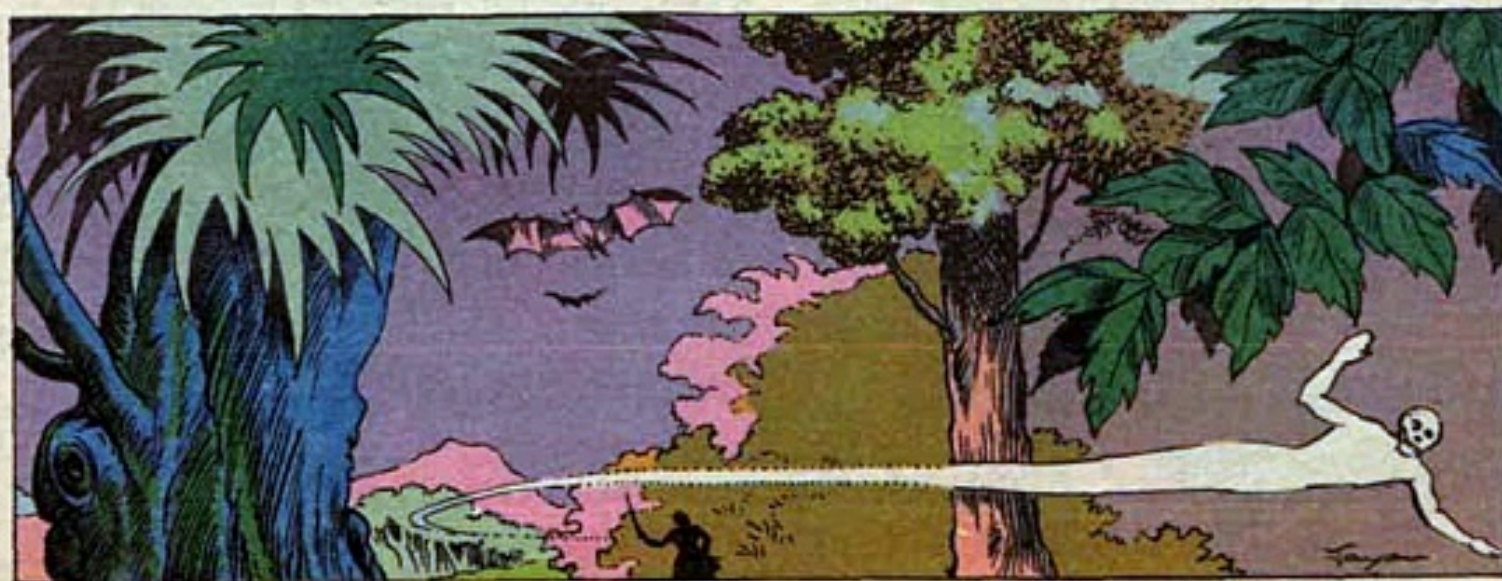
जुआरी का लाभ

आनन्द मोहन माना हुआ जुआरी था। शायद ही कोई दिन होता जब वह जुआ नहीं खेलता। हर रोज जुए में हार जाता, फिर भी इस खेल से बाज न आता।

एक दिन अपनी आदत के अनुसार वह आधी रात को घर लौटा और उसने दरवाज़े पर दस्तक दी। पत्नी ने झुंझलाते हुए दरवाज़ा खोला। आनन्द ने प्रसन्न मुद्रा में घर में प्रवेश किया। पति को खुश देखकर उसकी पत्नी ने सोचा कि आज वह जुए में जीत कर थोड़ा-बहुत धन लाया होगा। इसलिए ताने देती हुई बोली- "बड़े खुश नज़र आ रहे हो आज। शायद चार-पाँच रुपये जीत कर लाये होगे और समझ रहे होगे कि बड़ा तीर मारा है।"

"चार हज़ार रुपये तुम्हारी नज़र में सिर्फ़ चार रुपये हैं ? आश्चर्य है !" आनन्द खुश होकर बोला।

"क्या सचमुच तुम चार हज़ार रुपये लाये हो ?" पत्नी ने उत्तेजित होकर पूछा- "कहाँ है पैसे ? दिखाओ तो मुझे।"

आनन्द ने सफ़ाई देते हुए कहा- "माना कि इस वक्त मेरे पास चार हज़ार रुपये नहीं हैं, इसका यह मतलब तो नहीं कि मुझे इतनी रक़म का लाभ नहीं मिला है।"

"बात यह हुई कि जुए में हार जाने के कारण मैं किसी का पाँच हज़ार रुपये का कर्ज़दार हो गया। मेरे पास पैसे न होने के कारण उसने मेरी हीरे की अंगूठी ले ली, जो मैं ने सिर्फ़ एक हज़ार रुपये में खरीदी थी। अब तुम्हीं बताओ कि मुझे चार हज़ार रुपये का लाभ हुआ था नहीं।"

पत्नी निराश होती हुई बोली- "मेरे लिए तो जुआरी का लाभ और जुआरी का घाटा दोनों ही बराबर हैं।"
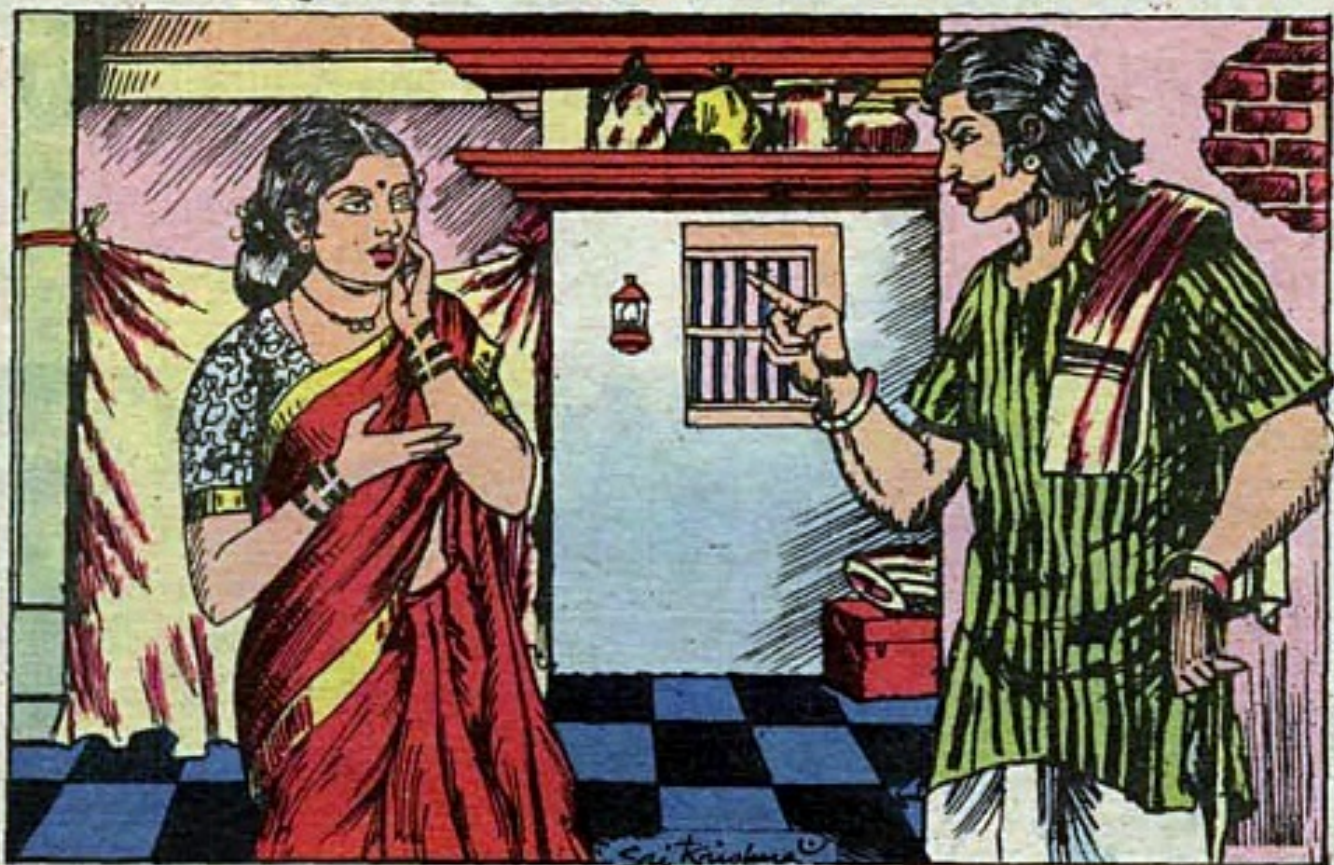
चोर से सिपाही

समरपूरी के दक्षिणी भाग में एक घना जंगल था। उस जंगल के आस-पास रहने वाले लोग जंगल के पशु-पक्षियों का शिकार किया करते थे। इतना ही नहीं, वे अपने जलावन के लिए वहाँ के पेड़ भी काट लिया करते थे।

यह खबर राजा चंद्रवर्मा को जब मिली, तो वे बहुत चिन्तित हुए। सोचने लगे-इस तरह तो सारा जंगल कुछ ही दिनों में खत्म हो जायेगा। इसलिए अपने मंत्री से सलाह लेकर जंगल की रक्षा के लिए उन्होंने एक अधिकारी नियुक्त किया।

एक दिन उस अधिकारी ने जंगल में एक युवक को लकड़ी काटते देखा। उन्होंने उस युवक को डाँटते हुए कहा- "क्या तुम्हें नहीं मालूम कि इस जंगल का पेड़ काटना अपराध है ? यदि राजा को यह बात मालूम हो जाये तो तुम्हें दण्ड में सौ अशर्फियाँ देनी पड़ेगी।"

युवक डर से कापते हुए बोला- "क्षमा चाहता हूँ, महोदय ! कुछ लोग इस जंगल में लकड़ी काट रहे थे। उनकी देखादेखी मैंने भी अपना पेट पालने के लिए यह काम शुरू कर दिया। मुझे नहीं मालूम था कि यहाँ की लकड़ी काटना अपराध है। कृपया क्षमा कीजिए।"

इस पर अधिकारी थोड़ा नरम होकर बोला- "चाहे तुम इस राज्य का कायदा जानते हो या न हो, अपराध अपराध ही है और इसका दण्ड तुम्हें अवश्य भोगना पड़ेगा ! समझे ! लेकिन चाहो तो तुम भी उनकी तरह निर्भय होकर लकड़ी काट सकते हो। लेकिन इसके बदले तुम्हें हर रोज़ पाँच अशर्फियाँ देनी पड़ेंगी। वे लोग भी इसी हिसाब से मुझे रोज़ पैसे देते हैं। अगर तुम मेरी शर्त को मान जाओ, तो मैं तुम्हें और लोगों की तरह लकड़ी काटने की अनुमति दे सकता हूँ। इससे तुम्हारे दो काम सिद्ध होंगे-एक तो, तुम दण्ड से बच जाओगे,

माया गुप्त

दूसरे, तुम्हारा फ़ायदा भी होगा ।''

युवक को लकड़ी से हर रोज़ दस अशर्फ़ियों की आमदनी होती थी । उसने सोचा कि इसे पाँच अशर्फ़ियाँ दे देने पर भी मेरे लिए पाँच बच जायेंगी । यह सोच कर उसने अधिकारी को पाँच अशर्फ़ियाँ दे दीं ।

इस प्रकार एक महीना बीत गया । दूसरे महीने में अधिकारी ने बताया कि युवक को दस अशर्फ़ियाँ देनी पड़ेंगी, तभी वह जंगल से लकड़ी काट सकता है ।

युवक ने सोचा कि यदि वह दस अशर्फ़ियाँ अधिकारी को दे देगा तो वह खुद खायेगा क्या ? इसलिए युवक ने अधिकारी को पाँच अशर्फ़ियों से अधिक देने से इनकार कर दिया । इस पर अधिकारी ने उसे लकड़ी काटने से मना किया, किन्तु युवक उसकी बात की ओर ध्यान न देकर लकड़ी काटता रहा । तब अधिकारी ने उसे धमकाया- ''यदि तुमने मेरी बात नहीं मानी तो तुम्हें बन्दी बना कर राजा के पास ले जाऊँगा ।''

युवक तनिक भी नहीं घबराया और निड़रतापूर्वक बोला- ''अच्छी बात है । मैं आप के साथ राजा के पास चलने को तैयार हूँ । मगर याद रखिए, यदि मैं राजा को सच्ची बात बात दूँ तो उल्टा आप ही संकट में पड़ जायेंगे ।''

अधिकारी ने युवक की बात पर ध्यान नहीं दिया, क्यों कि उसके रिश्वत लेने का कोई सबूत नहीं था । और उसे यह विश्वास था कि बिना सबूत और गवाही के राजा युवक की बातों पर विश्वास नहीं करेंगे । इसलिएं अधिकारी ने युवक को बन्दी बनाकर उसे सज़ा दिलाने के लिए राजा के सामने उपस्थित कर दिया ।

राजा चंद्रवर्मा ने युवक से कहा- ''तुमने राज्य का कानून तोड़ कर जंगल को नष्ट किया है । इस अपराध के लिए तुम्हें दण्ड मिलेगा । क्या तुम्हें अपनी रक्षा में कुछ बयान देना है ?''

युवक ने कहा- ''मैं अधिकारी महोदय से एक-दो सवाल पूछने की आज्ञा चाहता हूँ ।''

राजा ने आज्ञा दे दी ।

युवक ने अधिकारी की ओर मुड़कर पूछा- ''महाशय, क्या कृपया बतायेंगे कि आप मुझे जंगल में लकड़ी काटते हुए कितने दिनों से देख रहे हैं ?''

अधिकारी ने क्रोध में आकर राजा से युवक की शिकायत करते हुए कहा- "महाराज ! यह युवक बड़ा घमण्डी और गंवार है। यह पिछले एक महीने से जंगल की लकड़ियाँ काट रहा है। मना करने पर भी नहीं मानता और उल्टा मुझ पर रोब जमाता है ।"

"महाराज ! यह बात सच है कि पिछले एक महीने से मैं लकड़ी काट रहा हूँ। लेकिन अधिकारी महोदय ने इसके पहले आप से कोई शिकायत नहीं की ! आज इतने दिनों के बाद क्यों कर रहे हैं ? इसका क्या रहस्य है ?" युवक ने अपनी गलती मानते हुए राजा से कहा ।

युवक का संकेत समझते हुए राजा ने अधिकारी को डाँटते हुए कहा- "तुमने एक महीने तक युवक की शिकायत क्यों नहीं की ? मतलब साफ़ है कि तुम रिश्वत लेते रहे हो। और अब उसने रिश्वत देने से इनकार कर दिया है तब उसकी शिकायत करने आये हो ?"

अधिकारी ने अपना अपराध स्वीकार करते हुए सिर झुका लिया ।

युवक ने राजा को अपनी पूरी कहानी सुनाते हुए कहा- "महाराज ! मैं दस अशर्फ़ियाँ नहीं दे सका, इसीलिए इन्होंने मेरी शिकायत की। जो लोग दस अशर्फ़ियाँ इन्हें देते हैं, वे आज भी जंगल से लकड़ियाँ काट कर ले जाते हैं ।"

राजा ने उसी समय अधिकारी को अपने पद से हटा दिया और उसके बदले युवक को जंगल का अधिकारी नियुक्त किया ।

राजा ने फिर युवक से पूछा- "मैं समझता हूँ, तुम ईमानदारी से इस जिम्मेदारी को निभाओगे। लेकिन फिर भी इस बात का कोई सबूत नहीं है कि तुम भी इस अधिकारी की तरह रिश्वत न लोगे ।"

युवक ने नम्रतापूर्वक कृतज्ञता प्रकट करते हुए कहा- "महाराज ! मैंने रिश्वत का नतीज़ा अपनी आँखों से देख लिया है। अब ऐसा नीच काम करने का साहस मुझमें नहीं रहेगा ।"

राजा उसके उत्तर से पूरी तरह सन्तुष्ट हो गये ।

सच्चा गुरु

योगानन्द नाम के एक गुरु थे। उनके पास कई चेले थे। एक चेले का नाम शिवशंकर था।

शिवशंकर घमण्डी और क्रोधी था। वह अपने को बड़ा ज्ञानी और दूसरों को मूर्ख समझता था। यदि कोई उसे कुछ कहता तो उसका पारा चढ़ जाता और वह उन सबकी पिटाई कर देता। इतना ही नहीं, वह अपने सहपाठियों को बात-बात में गालियाँ भी सुनाया करता। शिवशंकर की पिटाई के डर से कोई भी चेला गुरु तक उसकी शिकायत करने की हिम्मत नहीं करता।

शिवशंकर के बुरे व्यवहार से परेशान होकर उसके सभी सहपाठी उससे बच कर दूर-दूर रहने लगे।

यह बात एक दिन गुरु योगानन्द को किसी प्रकार मालूम हो गई।

एक दिन गुरु योगानन्द अपने चेलों को उपदेश दे रहे थे- "जूतों के काटने पर कोई मनुष्य बदले में जूतों को नहीं काटता, बल्कि उसे छोड़ देता है।"

"उसी प्रकार कुत्तों के भौंकने पर कोई मनुष्य कुत्तों की तरह भौंकता नहीं, बल्कि उनसे दूर हट जाता है, जैसे आजकल तुम सब शिवशंकर से अलग-अलग रहते हो।"

यह सुन कर शिवशंकर झेंप गया और उसने अनुभव किया कि उसका व्यवहार सचमुच पशु के समान था।

उस दिन से शिवशंकर शान्त, विनम्र और मधुर भाषी बन गया।

बलि का बकरा हँस पड़ा

प्राचीन काल में काशी राज्य पर ब्रह्मदत्त नाम के एक राजा राज्य करते थे। उसी समय उनके समय में एक बार एक पहाड़ी पर बोधिसत्व ने देवदार वृक्ष के रूप में जन्म लिया। ये आस-पास के क्षेत्रों में रहनेवालों के आचार-विचार पर ध्यान रखते और उनकी परख करते ।

पहाड़ी की घाटी में गुरुकुल था । एक विद्वान पंडित वहाँ के आचार्य थे, जो अपने कुछ शिष्यों के साथ गुरुकुल में रहते थे ।

एक बार अनजान में आचार्य से कोई पाप हो गया । उस पाप से मुक्त होने के लिए उन्होंने एक व्रत रखने का निश्चय किया । उस व्रत के नियम के अनुसार उन्हें एक बकरे की बलि देनी थी । इसलिए आचार्य ने किसी धनी व्यक्ति से एक बकरा माँगा ।

बकरा मिल जाने पर आचार्य ने अपने दो शिष्यों को बुला कर कहा- "जाओ, इसे नदी में नहला कर और इसके गले में फूल-माला डाल कर ले आओ ।"

इनके शिष्य बकरे को नदी के पास ले गये । उस समय आकाश में काले-काले बादल घुमड़ रहे थे । लगता था, जोरों से आँधी और वर्षा आने वाली है । एक शिष्य ने बकरे को नदी में नहलायाा और दूसरे शिष्य ने फूल चुनकर माला तैयार की । फिर दोनों मिलकर बकरे के गले में माला डालने लगे ।

तभी अचानक बकरा हँस पड़ा । शिष्यों को लगा जैसे हँसी किसी मनुष्य की हो । किन्तु इधर-उधर देखने पर भी वहाँ बकरे के अलावा और कोई नहीं नज़र आया । जब उन्हें विश्वास हो गया कि हो न हो, अभी मनुष्य की तरह बकरा ही हँसा है, तो वे दोनों बहुत डर गये ।

वे दोनो शिष्य डर कर भागने ही वाले थे कि तभी उन दोनों ने देखा कि बकरे की आँखों से आँसू बह रहे हैं । शिष्यों को यह देख कर
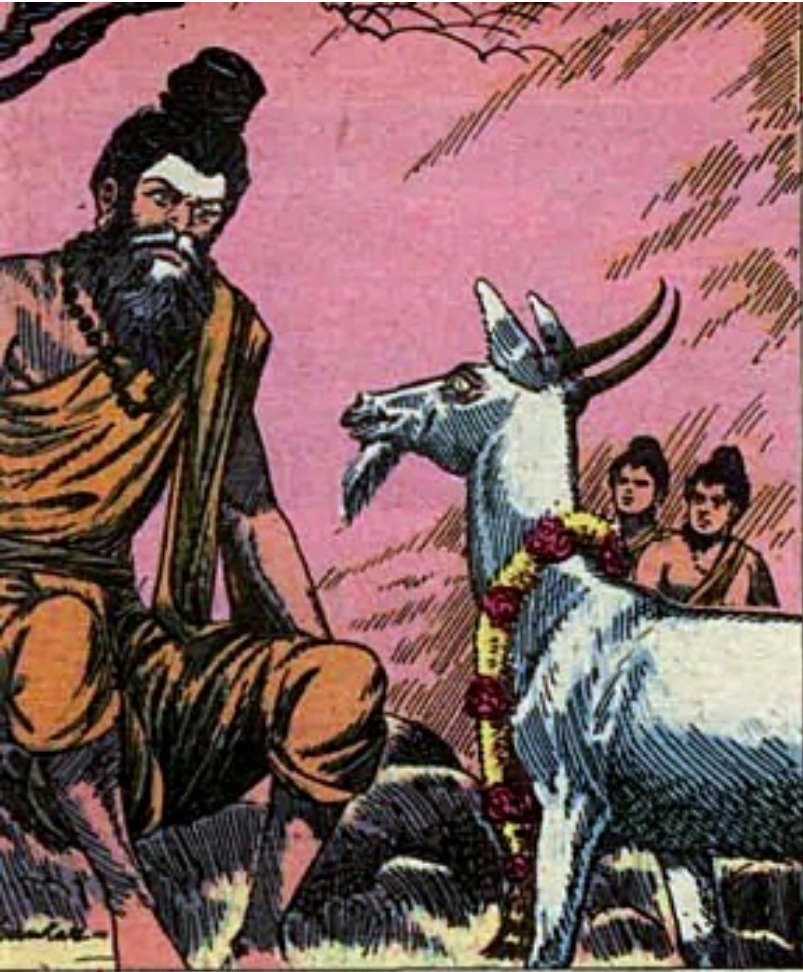
बड़ा आश्चर्य हुआ, लेकिन साथ ही, उनकी हिम्मत भी बँधी। वे तुरत बकरे को अपने आचार्य के पास ले गये।

शिष्यों ने आचार्य के कान में कहा- "गुरुदेव! ऐसा लगता है कि इस बकरे के अन्दर भूत प्रवेश कर गया है। नदी के पास यह मनुष्य की तरह हँसा और फिर रोने लगा। ऐसा पशु क्या बलि के योग्य हो सकता है? अच्छा हो यदि हम लोग बलि के लिए कोई और बकरा तलाश करें!"

इस पर आचार्य कुछ कहने ही जा रहे थे कि तभी बकरा मनुष्य की आवाज़ में बोला- "मुझे बलि का बकरा बनाने में तुम लोगों को क्या आपत्ति है? तुम सब ऐसा करने से डर क्यों रहे हो?"

मनुष्य की आवाज़ में बकरे को बोलते देख कर आचार्य और शिष्य आश्चर्य और भय से मूर्छित-से होने लगे।

बकरा इस पर उन्हें धीरज बंधाता हुआ बोला- "तुम सब डरो मत! हमसे तुम लोगों की कोई हानि नहीं होगी।"

आचार्य अपने को संभालते हुए बोले- "एक बकरे का मनुष्य की तरह बातें करना कितने आश्चर्य की बात है!"

"इसमें आश्चर्य की क्या बात है? मैं भी किसी जन्म में एक विद्वान ब्राह्मण था। मनुष्य की बुद्धि बनी रहने के कारण मैं बकरा होकर भी मनुष्यों की तरह बोल लेता हूँ। इसमें आश्चर्य करने की कोई बात नहीं है।" बकरे ने समझाया।

"तो फिर बकरे का नीच जन्म तुम्हें कैसे प्राप्त हुआ?" आचार्य ने उत्सुकता प्रकट की।

यह सुनते ही बकरा उदास हो गया। फिर बोला- "ब्राह्मण और पंडित होते हुए भी पिछले जन्म में मुझसे कई पाप-कर्म हो गये। उन पापों के फल से बचने के लिए मैंने कई व्रतों और नियमों का पालन किया। इतना ही नहीं, एक बकरे की बलि भी दी! लेकिन, फिर भी विधाता को धोखा न दे सका। बकरे की एक बार बलि के बदले मुझे पाँच सौ बार बकरे के रूप में जन्म लेना पड़ा।"

"पाँच सौ बार बकरे का जन्म...?" आचार्य ने लम्बी साँस लेकर कहा।

"जी हाँ ! पाँच सौ बार ! चार सौ निन्यानवे बार मैं बलि का बकरा बन चुका हूँ । आज आखिरी बार मेरी बलि पड़ने जा रही है । इसके बाद मैं बकरे के जन्म से मुक्त हो जाऊँगा । बलि के लिए नदी में स्नान करते समय अचानक मुझे पूर्व जन्मों की बात याद हो आयी । इसीलिए मैं वहाँ हँस पड़ा !"

आचार्य को बकरे की बात पर विश्वास हो रहा था, इसलिए वे उसकी बात को ध्यान से सुन रहे थे ।

"लेकिन तुम रोये क्यों ?" आचार्य को रोने का कारण अभी तक समझ में नहीं आया था, इसलिए उन्होंने यह प्रश्न किया ।

बकरा थोड़ी देर के लिए चुप हो गया ।

फिर बोला- "जिस पाप के कारण मुझे पाँच सौ बार बकरे का जीवन जीना पड़ा, वही पाप तुम करने जा रहे हो । जिस प्रकार मुझे इतने दिनों तक पशु-जीवन का दुख भोगना पड़ा, उसी प्रकार तुम्हें भी वही दुख झेलना पड़ेगा । यह सब सोच कर मेरी आँखों में आँसू आ गये ।"

आचार्य यह सब सुन कर सोच में पड़ गये । शिष्य आचार्य और बकरे के बीच हो रही ज्ञान-चर्चा पर विस्मित हो रहे थे । साथ ही, बकरे की बलि देने पर उनके गुरु को जो पाप भोगना पड़ेगा, इसकी कल्पना कर वे रोने-बिलखने लगे ।

आचार्य सोच रहे थे- "शास्त्रों का ज्ञान होने पर भी मनुष्य इतना मूर्ख क्यों बना रहता है ? एक पाप को मिटाने के लिए मनुष्य दूसरा पाप करता है और एक दुख से बचने की कोशिश में और भी नये-नये असंख्य दुखों के जाल में उलझता जाता है ।
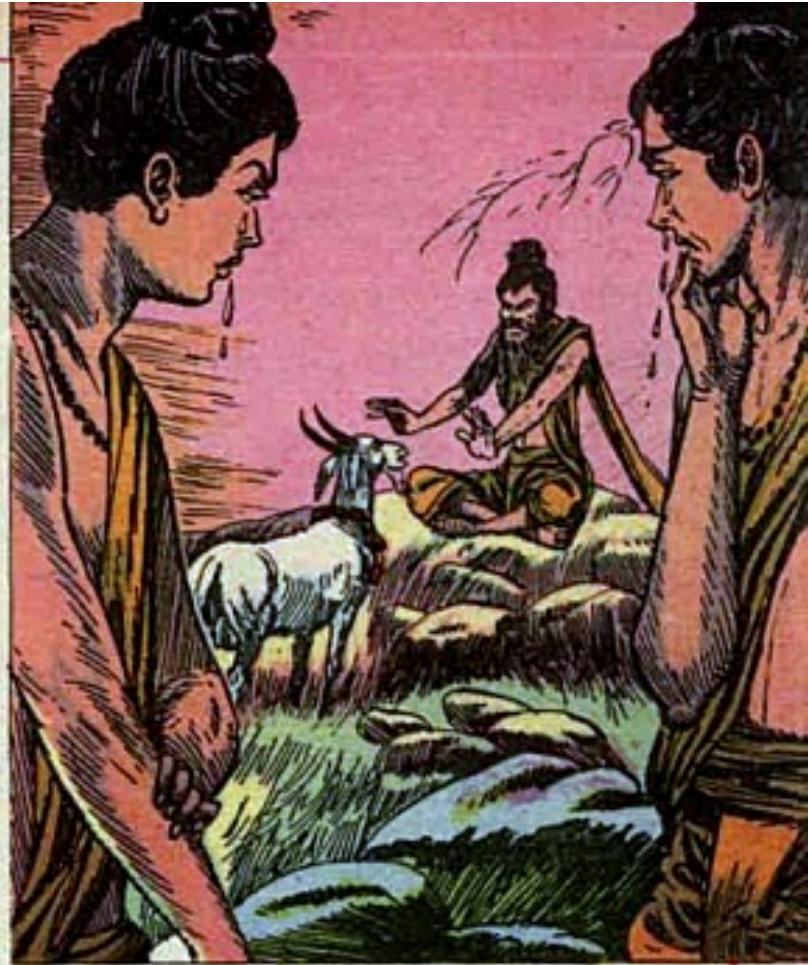
"मैं इस निर्दोष प्राणी के प्राण लेकर अब और पाप बढ़ाना नहीं चाहता ।"

आचार्य ने यह निश्चय कर लिया कि अब वह बकरे की बलि नहीं देंगे । उन्हें विश्वास हो गया कि इससे पाप कटता नहीं, बढ़ता है । बकरे से बोले- "डरो नहीं । मैं अब तुम्हें बलि नहीं दूँगा ।"

"मैं मृत्यु से नहीं डरता, बल्कि मैं बड़ी आतुरता से उसकी प्रतीक्षा कर रहा हूँ । वह जितनी जल्दी आयेगी, उतनी ही जल्दी मैं इस

पशु जीवन से मुक्त हो जाऊँगा।" बकरे ने कहा।

"यह तो ठीक है, लेकिन मैं क्यों तुम्हारी हत्या का पाप लूँ? यह तो अभी तुमने ही कहा है कि बलि देने से पाप कटता नहीं, बल्कि और बढ़ता है। अतः अब तुम चाहे कितना ही क्यों न गिड़गिड़ाओ, मैं तुम्हारी बलि नहीं दे सकता!" आचार्य ने दृढ़ता पूर्वक उत्तर दिया।

इस पर बकरे ने फिर कहा- "आज मेरी मृत्यु की घड़ी आ गयी है। यदि तुम्हारे हाथों नहीं हुई तो किसी और के हाथों होगी। लेकिन आज होगी निश्चित!"

"लेकिन ऐसा कदापि नहीं होना चाहिए। मेरे द्वारा तुम्हारी बलि पड़ने पर मैं ही तुम्हारी मृत्यु का जिम्मेदार होता। इसीलिए तुम्हारी रक्षा भी मेरी ही जिम्मेदारी होगी। मेरे जीते-जी तुम्हारे प्राणों को कोई हानि नहीं पहुँचा सकता!"

ऐसा कह कर आचार्य ने बकरे को रक्षा का आश्वासन दिया। इसके बाद बकरे को मुक्त कर दिया गया। आचार्य और उनके शिष्य बकरे की रक्षा के लिए उसके पीछे-पीछे चलने लगे।

कुछ देर तक बकरा फलों के बाग में घूमता रहा। फिर इधर-उधर भटकता हुआ पहाड़ी की ओर चल पड़ा। धीरे-धीरे वह पहाड़ी की चोटी पर चढ़ गया। तभी आसमान के काले बादल घोर गर्जन करने लगे और बिजली चमकने लगी। अचानक भयंकर कड़क के साथ चोटी पर वज्रपात हुआ और बकरा उसी बिजली में जल कर राख हो गया।

आचार्य और उनके शिष्य दूर से यह सब देखते रहे।

पहाड़ी पर स्थित देवदार के रूप में बोधिसत्व को इस घटना से बड़ा सन्तोष मिला।

एक तो प्राकृतिक मृत्यु से बकरे का पशु-जीवन समाप्त हुआ। दूसरे, पापों से मुक्त होने के लिए और पाप करते जाना कितनी बड़ी मूर्खता है, यह ज्ञान कुछ लोगों के ह्रदय में उदय हुआ। यही बोधिसत्व के सन्तोष का कारण था।

जहाँगीर - शाहजहाँ

अकबर के बाद उसका बेटा सलीम जहाँगीर के नाम से गद्दी पर बैठा । अपने अदार्शवादी पिता के विपरीत, जहाँगीर, देश की तरक़्क़ी के काम करने की बजाय भोग-विलास और आराम की ज़िन्दगी बिताने लगा ।

अपनी खूबसूरती के लिए मशहूर, मेहरुन्निसा नाम की एक विधवा युवती से इन्होंने विवाह किया तथा उसका नाम बदल कर नूरजहाँ रखा । धीरे-धीरे नूरजहाँ शासन के कामों में दिलचस्पी लेने लगी । सिक्कों पर जहाँगीर के चित्र के साथ नूरजहाँ का चित्र भी छपने लगा ।

जहाँगीर के सबसे बड़े बेटे खुसरो ने पिता के खिलाफ़ विद्रोह कर दिया तथा राज्य हड़पने की कोशिश की । परन्तु उसे पंजाब तक खदेड़ दिया गया और वहीं कारागार में डाल दिया गया, जहाँ कुछ दिनों के बाद उसकी मृत्यु हो गई ।
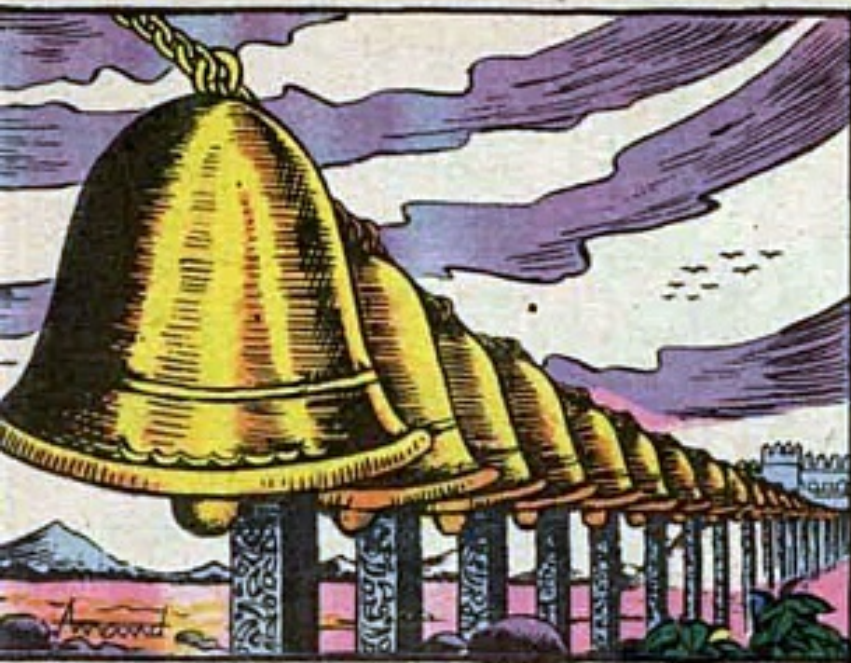
जो भी हो, जहाँगीर अपने न्याय के लिए बहुत प्रसिद्ध था। अपनी प्रजा को न्याय दिलाने के लिए उसने जी-तोड कोशिश की और आगरा के क़िले से लेकर जमुना नदी तक एक जंजीर के साथ ६० घण्टियाँ लटकाने का इन्तज़ाम कर और यह घोषणा करवा दी कि न्याय पाने के इच्छुक रात या दिन किसी समय राजा से मिलने के लिए घण्टी बजा सकते हैं।

इंग्लैण्ड के राजा जेम्स प्रथम के दो राजदूत-कप्तान हॉकिन्स तथा सर थॉमस रो, बादशाह जहाँगीर से मिलने आये। उन्होंने भारत में व्यापार करने की आज्ञा माँगी। सर थॉमस रो ने किसी प्रकार जहाँगीर से कुछ रियायतें लेने में सफलता प्राप्त कर ली और इस प्रकार उन्होंने अंगरेज़ों के भारत-प्रवेश का मार्ग खोल दिया।

जहाँगीर के राज्य काल की एक और महत्वपूर्ण घटना यह थी कि इसी समय मेवाड़ मुगल साम्राज्य में मिलाया गया था। राणा प्रताप ने अपने जीते-जी मुगलों से हार नहीं मानी, किन्तु उनका बेटा राणा अमर सिंह वैसे बहादुर और पराक्रमी न थे। उन्होंने जहाँगीर की अधीनता क़बूल कर ली।

जहाँगीर के बाद शाहजादा खुर्रम ने अपने भाई शरियार, जिसने खुर्रम का विरोध किया था, तथा अन्य भाइयों को भी मार कर शाहजहाँ के नाम से अपने को बादशाह घोषित कर दिया ।

शाहजहाँ ऐशो आराम का बहुत शौकीन था । अतुल धनराशि खर्च करके उसने अपने लिए एक अद्भुत मयूर सिंहासन बनवाया था । उन्हीं दिनों फारस के राजा ने मुगल साम्राज्य के एक भाग कन्धार पर कब्ज़ा कर लिया । शाहजहाँ ने उसे वापस लेने के लिए फारस से युद्ध किया, लेकिन हार खानी पड़ी ।

शाहजहाँ ने दिल्ली में लाल क़िला तथा दूसरी शानदार इमारतें बनवाईं । लाल क़िले के अन्दर दीवाने-खास की दीवारों पर इन्होंने खुदवाया- "अगर दुनिया में कहीं स्वर्ग है तो वह यहीं है, यहीं है, यहीं है ।"
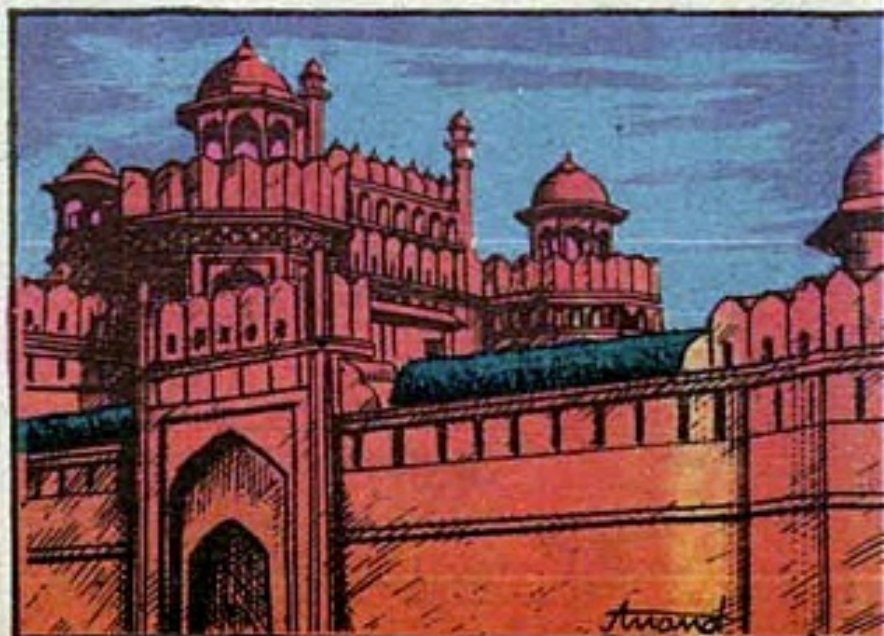
शाहजहाँ को अपनी बेगम मुमताज के लिए बेहद प्रेम था। दारा, शुजा, औरंगज़ेब और मुराद - इन चार बेटों की माँ, मुमताज ने शाहजहाँ के जीवन को हर प्रकार के सुख और आनन्द से महका दिया था।

किन्तु मुमताज की असामयिक मौत से शाहजहाँ के जीवन को बहुत गहरा आघात पहुँचा। अपनी बेगम की याद में उन्होंने उनकी क़ब्र पर संगमरमर का एक बेमिसाल भवन-ताजमहल बनवाया। अद्भुत वास्तु-कला के लिए यह आज भी दुनिया का अद्वितीय नमूना है।
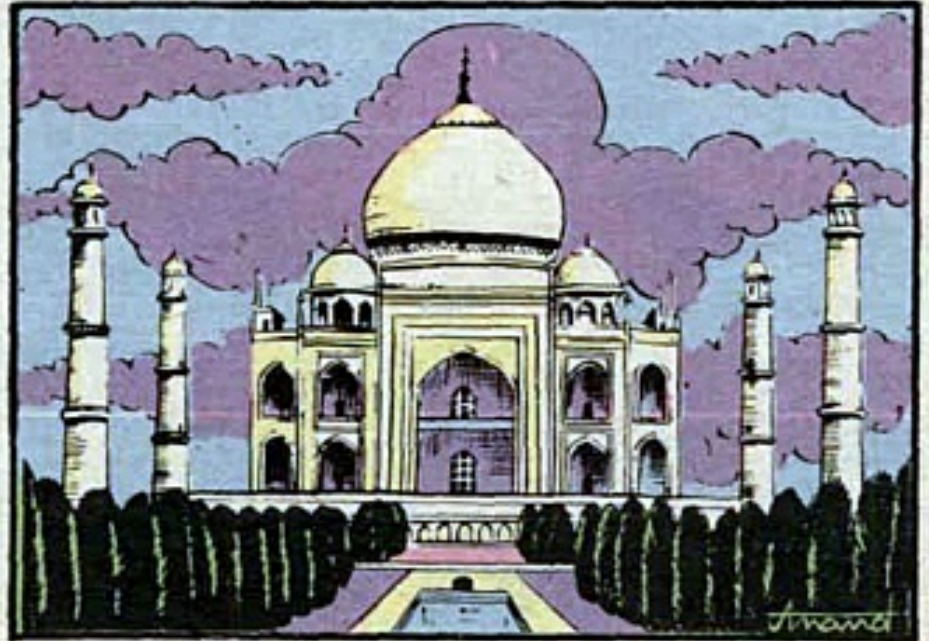
शाहजहाँ के अन्तिम दिन दर्द और आँसू में कटे। औरंगज़ेब ने अपने भाइयों को मार कर शाहजहाँ को भी कारागार में डाल दिया। शाहजहाँ अपनी बेटी जहाँनारा की देख-भाल में, जमुना के उस पार ताज महल की ओर उदास नज़रों से देखते अपने शेष दिन बिताता रहा और सन् १६६६ में कारागार में ही दम तोड़ दिया।

कमाल का कमाल

एक समय की बात है। कैरो नगर में मुस्तफा नाम का एक अमीर सौदागर रहता था। वह सभी सौदागरों में सबसे अधिक धनी माना जाता था। उसकी एक मात्र सन्तान थी-उसकी खूबसूरत बेटी। वह अपने पिता की सारी जायदाद और दौलत की वारिस थी। इसलिए लोग सोचते थे कि उसकी बेटी की शादी किसी सुलतान के बेटे से होगी। लड़की के माँ-बाप तथा उनके रिश्तेदारों का भी यही ख्याल था।

मुस्तफा के घर में एक गुलाम युवक था-नाम था कमाल। एक साल पहले मुस्तफा ने उसे एक हाट से खरीदा था। वह बुद्धिमान और चालाक होने के साथ-साथ देखने में सुन्दर भी था। वह मन ही मन यह समझता कि अपने मालिक की बेटी के लिए वह सर्वथा योग्य वर है। लेकिन यह बात उसने किसी पर प्रकट नहीं की।

अपनी एक साल की कमाई से उसने जो कुल पूंजी जमा की थी-वह थी सोने की एक अंगूठी और अंगूरी शराब की एक छोटी सी बोतल। ये दोनों चीज़ें उसने पड़ोसी सौदागर के घर से चुरा ली थीं। इन दो चीजों की भेंट देकर अपने मालिक की बेटी से वह शादी कर लेगा, ऐसा सोचने वाला वह भोला न था। वह समझता था कि यह काम इतना आसान नहीं है। इसलिए उसने एक नयी चाल खेली।

गर्मी के दिन थे। सूरज डूबने जा रहा था। ठण्ढी-ठण्ढी हवा बह रही थी। सौदागर, पत्नी और बेटी के साथ अपने बाग में टहल रहा था। कमाल उन लोगों से कुछ दूर हट कर पीछे-पीछे चल रहा था। गुलाम का यह कर्त्तव्य था कि अपने मालिक का हुक्म सुनने के लिए वह मालिक के पीछे-पीछे चला करे।

सौदागर तथा उसकी पत्नी अपने घरेलू मामलों तथा रिश्तेदारों के बारे में बातचीत

करने लगे। उनकी बेटी टहनियों पर फुदकने वाले पक्षियों और तितलियों को देख-देख हँसने और तालियाँ बजाने लगी। कमाल उन चिड़ियों को ध्यान से देख-देख अपने-आप ही कुछ बड़बड़ाने लगा।

सौदागर ने कमाल की अजीब-सी हरकतें देखीं जरूर मगर कहा कुछ नहीं। जब कमाल लगातार वैसी ही हरकतें करता रहा, तो सौदागर को बड़ा आश्चर्य हुआ। उसने पूछा- "कमाल! तुम इस तरह अपने आप से क्या बड़बड़ा रहे हो?"

कमाल ने जवाब में अपना सर झुका दिया। सौदागर ने फिर हँसते हुए कहा-

"तुम्हारे व्यवहार से लगता है जैसे तुम पक्षियों की भाषा समझते हो!"

सौदागर की बात पर उसकी पत्नी और बेटी दोनों हँस पड़ीं। कमाल ने आश्चर्य प्रकट करते हुए उन लोगों की ओर इस प्रकार देखा जैसे कि उसका कोई बहुत बड़ा राज़ खुल गया हो।

इससे सौदागर की उत्सुकता और बढ़ गई। उसने कमाल से पूछा- "यह तुम अपने आप से क्या बक-बक किये जा रहे हो?"

"मालिक! आप ठीक ही फरमा रहे हैं। आप को, जैसा कि शक है, मैं पक्षियों की बोली समझता हूँ।" कमाल ने थोड़ा झिझकते हुए जवाब दिया।

यह सुन कर सौदागर हैरान-सा हो गया। उसे समझ में नहीं आया कि इस बात पर अपने गुलाम को वह डाँटे या इनाम दे।

उसी समय पास के एक पेड़ पर बैठा हुआ कौआ काँव-काँव करने लगा।

"यह कौआ क्या कह रहा है?" सौदागर ने उसकी अक्ल की परीक्षा लेनी चाही।

कमाल तनिक भी घबराया नहीं। बड़े इतमीनान से बोला- "मालिक! यह कौआ कह रहा है कि अंगूरी शराब की छोटी-सी बोतल उस पेड़ के तने के पास गाड़ी गई है।" यह कह कर उसने एक पेड़ की ओर संकेत किया।

सौदागर को थोड़ा भी विश्वास नहीं था कि उसकी बात सच होगी। वह अपने गुलाम को ऐसी डींग हाँकने की खासी सज़ा देना चाहता था। ऐसा सोचते हुए सौदागर ने पास ही पड़े

एक कुदाल लेकर उस पेड़ के पास खुदाई करने लगा। लेकिन तब उसके आश्चर्य का ठिकाना न रहा जब उसे सचमुच अंगूरी शराब की एक बोतल हाथ लगी। उसकी पत्नी और बेटी आश्चर्य से हक्की-बक्की हो गईं।

इसी बीच एक पक्षी कुछ चह चहाकर उन सबके सिर पर से उड़ता हुआ चला गया। कमाल ने कुछ इस तरह सर हिलाया जैसे वह चिड़िया की कही हुई बात पहले से ही जानता था।

"क्या यह पक्षी भी कोई राज़ बता रहा है ?" सौदागर की पत्नी ने जानना चाहा।

कमाल ने सिर झुका कर कहा-

"हाँ मालकिन ! यह पक्षी कहता है कि सामने वाले पेड़ पर के घोंसले में सोने की एक अंगूठी रखी है।"

सौदागर ने बड़ी आतुरता से इस बात की भी खुद ही जाँच करनी चाही। इसलिए सौदागर किसी माली को न बुला कर खुद ही पेड़ पर चढ़ गया। घोंसले में सचमुच उसे सोने की एक अंगूठी मिली।

सौदागर को अब कमाल की बुद्धि पर यक़ीन हो गया। उसने उसे गले से लगाकर प्यार किया और कहा- "कमाल ! तुम संसार में सबसे बुद्धिमान व्यक्ति हो।"

सौदागर की पत्नी ने भी खुश होकर हाँ में हाँ मिलाया।

पास की झाड़ियों में कुछ पक्षी फिर चह

चहाने लगे।

इस पर कमाल क्रोधित हो उठा और चिड़ियों को डाँटता हुआ बोला- "बस बस ! अब चुप भी करो।"

चिड़ियों को डाँटते हुए देख कर सौदागर की उत्सुकता और भी बढ़ गई। उन्होंने कमाल से पूछा- "ये पक्षी क्या कह रहे हैं ?"

कमाल शर्म से गड़ गया और डर से काँपते हुए कहने लगा-

"माफ़ कीजीए मालिक ! यह मुझसे मत पूछिए।"

सौदागर ग़ुलाम की बात का बुरा मान गया। उसने डाँट कर कमाल को कहा- "यह मेरा हुक्म है। तुझे पक्षियों की बात बतानी ही

होगी ।"

सौदागर की पत्नी ने भी कमाल को प्यार से समझाते हुए कहा- "तुम तो भले आदमी हो। तुम्हें हम से कोई बात नहीं छिपानी चाहिए।"

कमाल डर से थर-थर काँपने लगा। फिर साहस बटोर कर बोला-

"मालिक! वह बात बताने से पहले मेरी जुबान कट जाये। बेहतर हो, मैं अभी मर जाऊँ। यह बात सुन कर आप ज़रूर मुझे मौत की सज़ा देंगे।"

"तुम्हें किसी प्रकार का ख़तरा न होगा, यह मैं तुमसे वादा करता हूँ।" सौदागर ने उसे हिम्मत बँधाई और निडर होकर उसे चिड़ियों की बात बताने के लिए कहा।

"और मैं उनके वादा की गवाह हूँ। तुम्हें डरने की कोई जरूरत नहीं है। बेझिझक बोलो।" सौदागर की बीबी ने कहा।

कमाल ने अनिच्छा प्रकट करते हुए कहा- "अच्छी बात है। आप लोग जब इतना दबाव डाल रहे हैं तब मुझे कहना ही पड़ेगा।

"ये पक्षी बता रहे हैं कि आप का परिवार जल्दी ही एक भयंकर खतरे में पड़नेवाला है। यदि उस खतरे से बचना है तो अपनी बेटी का विवाह मुझसे करना होगा।"

यह जवाब सुन कर सभी अवाक् रह गये।

लेकिन सौदागर थोड़ी देर सोच कर बोला- "इसमें हर्ज़ भी क्या है। यदि थोड़ी देर के लिए यह बात भूल जायें कि कमाल गुलाम और गरीब है तो वह हर हालत में मेरी बेटी के लायक़ वर है।"

फिर कमाल की ओर मुड़ कर बोला-

"जब तुम मेरे दामाद बन जाओगे और जब सबको यह मालूम होगा कि तुम मेरी सारी दौलत और जायदाद के वारिस हो तो तुमसे यह कोई न पूछेगा कि तुम कहाँ पैदा हुए और कहाँ पाले-पोसे गये।"

सौदागर की भोली-भाली बीबी बोली- "देखो तो, मनुष्य कितने नासमझ और मूर्ख होते हैं और पक्षी कितने बुद्धिमान! इस विवाह में हम सब की भलाई है, इसलिए जल्दी ही हो जाना चाहिए।" ऐसा कहती हुई सौदागर की बीबी ने भी इस बात को खुशी से मान लिया।

दिल की बीमारी का इलाज

छतर पुर गाँव के जमीन्दार बाबू बेनी माधव सिंह कुछ दिनों से दिल की बीमारी से ग्रस्त थे। उनकी बीमारी की खबर पाकर किशनगढ़ निवासी उनका भानजा सदाशिव उन्हें देखने आया। सदाशिव के साथ उसका मित्र चिदानन्द भी आया।

मामा के प्रति भानजे का प्रेम देख कर बाबू बेनी माधव बहुत खुश हुए। लेकिन उनकी हालत देख सदाशिव बहुत दुखी हुआ।

बेनी बाबू का इलाज उस इलाके के सभी बड़े-बड़े वैद्य और हकीम कर रहे थे। यह जान कर सदाशिव को थोड़ा सन्तोष हुआ। लेकिन फिर भी, बीमारी घटने का नाम न लेती थी, इस पर उसे बड़ी चिन्ता भी हुई।

मामा का मन बहलाने के ख्याल से सदाशिव ने उन्हें इधर-उधर की बातें बतानी शुरू कर दीं। बेनी बाबू का भी मन रम गया और वे थोड़ा हल्का अनुभव करने लगे। थोड़ी देर के बाद उन्होंने भानजे से पूछा- "चंद्रनाथ की खबर तुमने बताई नहीं। इस वर्ष उसके खेतों में कैसी फसल हुई ? सुना है, उसकी रब्बी इलाके भर में सबसे अच्छी हुई है !"

"अच्छी ! क्या कहते हैं मामा जी ! किसने कहा कि उसकी रब्बी की फसल अच्छी हुई है ? बेचारे की तो इस साल क़िस्मत ही फूट गई। उनकी सारी फसल को घुन चाट गई, चिन्ता के मारे उन्होंने खाट पकड़ ली है। कहाँ तो पहले वे चौपाल में शेर की तरह गरजते रहते और अपनी जमीन्दारी की डींगें मारा करते किन्तु अब बेचारे वे पड़े-पड़े राम-नाम जपा करते हैं।"

यह सब सुन कर बेनी बाबू की बाछें खिल गईं। वे फुर्ती से उठ कर बैठते हुए बोले- "क्या सचमुच ऐसी बात है ?" फिर थोड़ा उदास चेहरा बनाकर बोले- "लेकिन यह बहुत बुरा हुआ सदाशिव !"

सुमित्रा शर्मा

"जो होता है ठीक ही होता है, मामाजी ! उन्होंने भी कितने छोटे-छोटे किसानों की खड़ी फसलें उजड़वा दीं । भगवान सब कुछ देखता है ।" सदाशिव ने चंद्रनाथ बाबू की निन्दा करते हुए कहा ।

भानजे के मुख से चंद्रनाथ की निन्दा सुनकर बेनी बाबू की आत्मा को बड़ी शान्ति मिली । वे सदाशिव को मन ही मन आशीर्वाद देते हुए बोले- "बेटा सदाशिव ! बड़ा अच्छा हुआ तुम आ गये । तुम्हारे आने से इलाके की जरूरी खबरें भी मिल गईं और तुमसे बातचीत कर मन हल्का भी हो गया ।"

थोड़ी देर रुक कर फिर अचानक कुछ याद करते हुए बोले- "अरे हाँ ! एक बात तो पूछना भूल ही गया ! मैंने सुना है कि चंद्रनाथ बाबू की बेटी रमा के लिए रामगढ़ के प्रसिद्ध जमीन्दार बाबू त्रिलोकी सिंह के यहाँ से रिश्ता आया है ? भगवान की कृपा से जितनी जल्दी उसके हाथ पीले हो जायें, अच्छा ही है ।"

सदाशिव नाक-भौं सिकोड़ कर बोला- "उनकी बेटी का रिश्ता बाबू त्रिलोकी सिंह के यहाँ तो दूर की बात है ! ज्योतिषी तो यह कहते हैं कि उस कन्या के भाग्य में विवाह का तो योग ही नहीं है, चाहे चंद्रनाथ बाबू के पास कितनी भी दौलत क्यों न हो !"

बात करते-करते बेनी बाबू काफी स्वस्थता का अनुभव करने लगे । उनके चेहरे पर एक सन्तोष और खुशी का भाव था ।

चिदानन्द को अपने मित्र सदाशिव की बातें बहुत अटपटी लगीं । उसने सोचा, चंद्रनाथ बाबू और सदाशिव में हाल ही में जो कहा-सुनी हो गई थी- इसीसे सदाशिव ने जान बूझ कर अपने मामा के सामने उसकी निन्दा की है ।

थोड़ी देर बाद दोनों मित्र अपने गाँव के लिए रवाना हो गये । रास्ते में चिदाननन्द ने कहा- "सदाशिव भाई ! तुम भी रह गये निपट गंवार ! तुम्हारे मामा अपनी सज्जनता के कारण अपने परिचित लोगों का कुशल-क्षेम पूछ रहे थे और एक तुम हो कि उन्हें अभद्र उत्तर दे रहे थे ! चंद्रनाथ बाबू के साथ एक छोटे झगड़े के कारण उनके लिए अशोभनीय बातें तुम्हें नहीं कहनी चाहिएं ।"

सदाशिव फिर मुस्कुराया। पर कुछ बोला नहीं। चिदानन्द बोलता गया-

"क्या तुम्हें यह नहीं मालूम था कि चंद्रनाथ के खेतों में इस वर्ष और वर्षों से अधिक पैदावार हुई है! और उनकी बेटी का रिश्ता रामगढ़ के सबसे बड़े जमीन्दार के घर तय हुआ है?" चिदानन्द को जैसे गुस्सा आ रहा था।

"मुझे सब मालूम है। लेकिन तुम मेरे मामा के बारे में कुछ नहीं जानते। तुमने देखा नहीं कि मेरी बात सुन कर वे कितना प्रसन्न हुए और फुर्ती से बिस्तर पर उठ बैठे। अब मामाजी जल्दी ही चंगे हो जायेंगे।"

चिदानन्द को यह सब कुछ समझ में नहीं आया। "पहेलियाँ क्यों बुझा रहे हो? साफ-साफ क्यों नहीं बताते कि माजरा क्या है।" चिदानन्द ने सदाशिव से पूछा।

तब सदाशिव ने समझाते हुए कहा- "बात यह है कि मेरे मामा और बाबू चंद्रनाथ सिंह दोनों इस जनपद के बड़े जमीन्दार हैं और ये दोनों शुरू से ही एक दूसरे को फूटी कौड़ी भी नहीं सुहाते। दोनों ही एक-दूसरे को नीचा दिखाने की चाल चलते रहते हैं। चंद्रनाथ बाबू की तरक्की और उनका बढ़ता हुआ नाम ही मेरे मामा की बीमारी का कारण है। अगर सच्ची बात बताता तो उनके दिल की गति सदा-सदा के लिए उसी समय रुक जाती।"

चिदानन्द को यह सुन कर बड़ी हैरानगी हुई लेकिन अपने मित्र की बात पर पूरी तरह यक़ीन न कर सका।

एक बार उसे किसी अन्य काम से छतरपुर जाना पड़ा। शिष्टाचारवश वह बेनी बाबू को देखने चला गया। उसे यह देख कर ताज्जुब हुआ कि मामा जी पूरी तरह चंगे हो चुके थे और अपने काम-काज में व्यस्त थे।

चिदानन्द को अब पूरी तरह विश्वास हो गया कि सदाशिव के मामा जी के दिल की बीमारी का कारण उनका डाह और द्वेष ही था।

उसने घर जाकर यह बात सदाशिव को बताते हुए कहा- "तुम्हारे इलाज से मामा जी अब बिल्कुल ठीक हो गये हैं।"
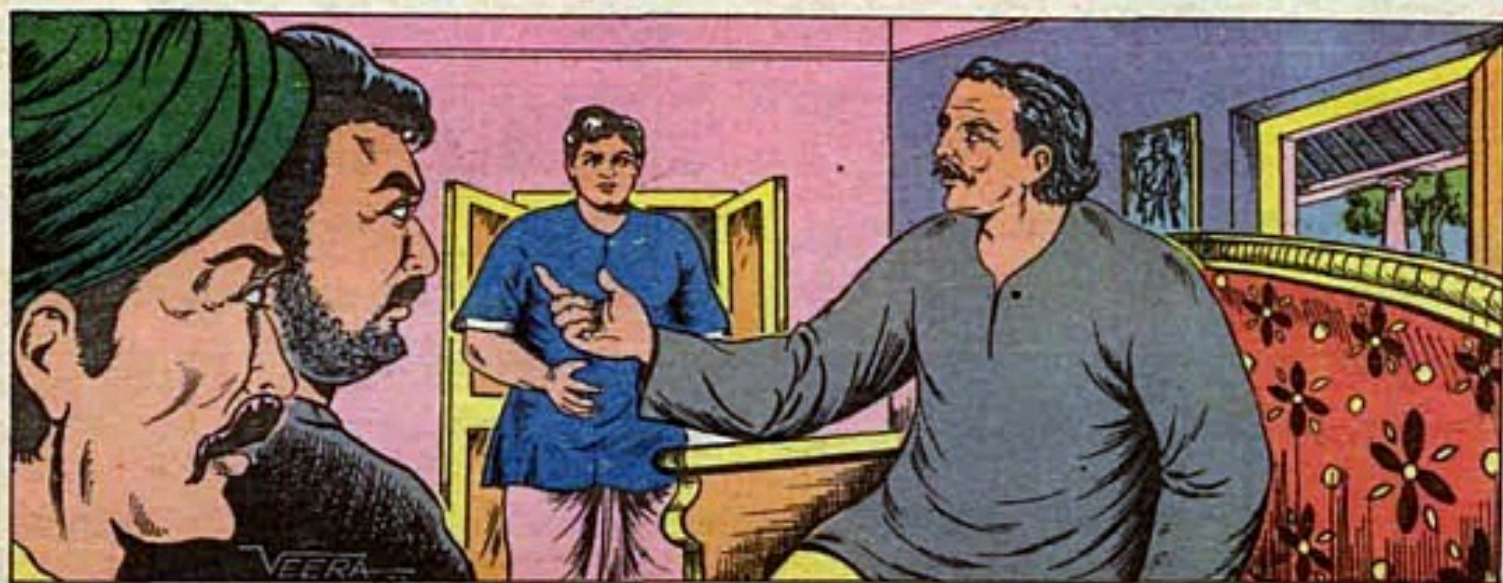
नारी की प्रियतम वस्तु

एक दिन सन्ध्या समय राजा अपनी रानी के साथ शाही बाग में घूम रहे थे। उस समय रानी ने राजा से पूछा- "महाराज ! क्या आप बता सकते हैं कि नारी के लिए सबसे प्रिय क्या है ?"

राजा ने बाग में एक सरसरी नज़र दौड़ाई। चारों ओर रंग-बिरंगे फूल खिल रहे थे। राजा ने सोचा कि रानी ने इन सुन्दर फूलों को देख कर ही ऐसा प्रश्न किया है। इसलिए उन्होंने झट उत्तर दिया- "फूल।"

"नहीं।" रानी ने मुस्कुराते हुए कहा।

"पति और बच्चे !"

"नहीं।"

"आभूषण ! साड़ियाँ !"

"ये भी नहीं।" रानी इनकार करती गयी।

राजा रानी के मन की बात जानने के लिए बहुत उत्सुक हुए। इसलिए उन्होंने राज्य भर में घोषणा करवाई कि जो भी व्यक्ति रानी के इस प्रश्न का उत्तर देगा, उसे पुरस्कार में एक हज़ार स्वर्ण मुद्राएँ दी जायेंगी।

दूसरे दिन राजा के दरबार में उत्तर देनेवालों की एक भीड़ एकत्र हो गयी। राजा ने उनसे कहा- "यदि तुम लोगों का उत्तर ठीक नहीं हुआ तो तुम पर कोड़ों की मार पड़ेगी।"

राजा की इस घोषणा को सुनकर भय से सभी लोग भाग गये। राजा को इस बात पर क्रोध आ गया और उन्होंने यह घोषणा करवा दी कि दूसरे दिन से महल से एक कबूतर छोड़ा जायेगा और जिस मकान पर वह कबूतर जाकर बैठेगा उसके एक आदमी को रानी के सवाल का जवाब देना होगा। यदि रानी उसके जवाब से सन्तुष्ट नहीं हुई तो उस व्यक्ति का सिर काट लिया जायेगा।

राजा की घोषणा के अनुसार दूसरे दिन महल से एक कबूतर उड़ा और दूर के एक मकान पर जाकर बैठ गया। यह एक मछुआरे का मकान

पच्चीस वर्ष पहले 'चन्दामामा' में प्रकाशित कहानी

था। कबूतर के साथ- साथ चलने वाले राज कर्मचारियों ने उस घर में प्रवेश किया। उस समय मछुआरा घर पर नहीं था। उसका बेटा जाल बुन रहा था। राज-कर्मचारी उसके बेटे को ही पकड़ कर राजा के पास ले गये। राजा ने घोषणा की सारी कहानी बताते हुए मछुआरे के बेटे से रानी के प्रश्न का उत्तर पूछा।

मछुआरे के बेटे ने डर से काँपते हुए कहा- "महाराज ! यह प्रश्न बड़ा टेढ़ा है। इसके उत्तर पर विचार करने के लिए पंद्रह दिनों का समय देने की कृपा करें।"

राजा ने उसकी प्रार्थना मान ली।

पंद्रह दिनों में मछुआरा का बेटा उत्तर के लिए बहुत लोगों से मिला। उसने कई स्त्रियों से पूछा कि उनकी प्रिय वस्तु क्या है, लेकिन सबने वही घिसा-पिटा जवाब दिया। कुछ ने आभूषण, कुछ ने बेटा तथा कुछ ने पोता-पोती बताया। सब के जवाब बहुत साधारण थे।

मछुआरे के बेटे ने सोचा कि ऐसे साधारण उत्तर के लिए राजा ऐसी घोषणा नहीं करवायेंगे। हो न हो, इसमें कोई रहस्य है। उसे कोई अच्छा उत्तर नहीं सूझ पाया। वह निराश हो यह सोचने लगा कि अब उसकी मौत निश्चित है।

दो सप्ताह का समय पूरा होने में अब केवल एक दिन शेष था। आखिरी दिन वह आनेवाली मौत की चिन्ता में डूबा हुआ एक तालाब की मेड़ पर बैठा हुआ था। उस रास्ते से एक बुढ़िया गुजर रही थी। उसने मछुआरे के बेटे को बहुत उदास देख कर पूछा- "बेटे ! तुम्हें किस बात का दुख है ? तुम इतने परेशान क्यों हो ?"
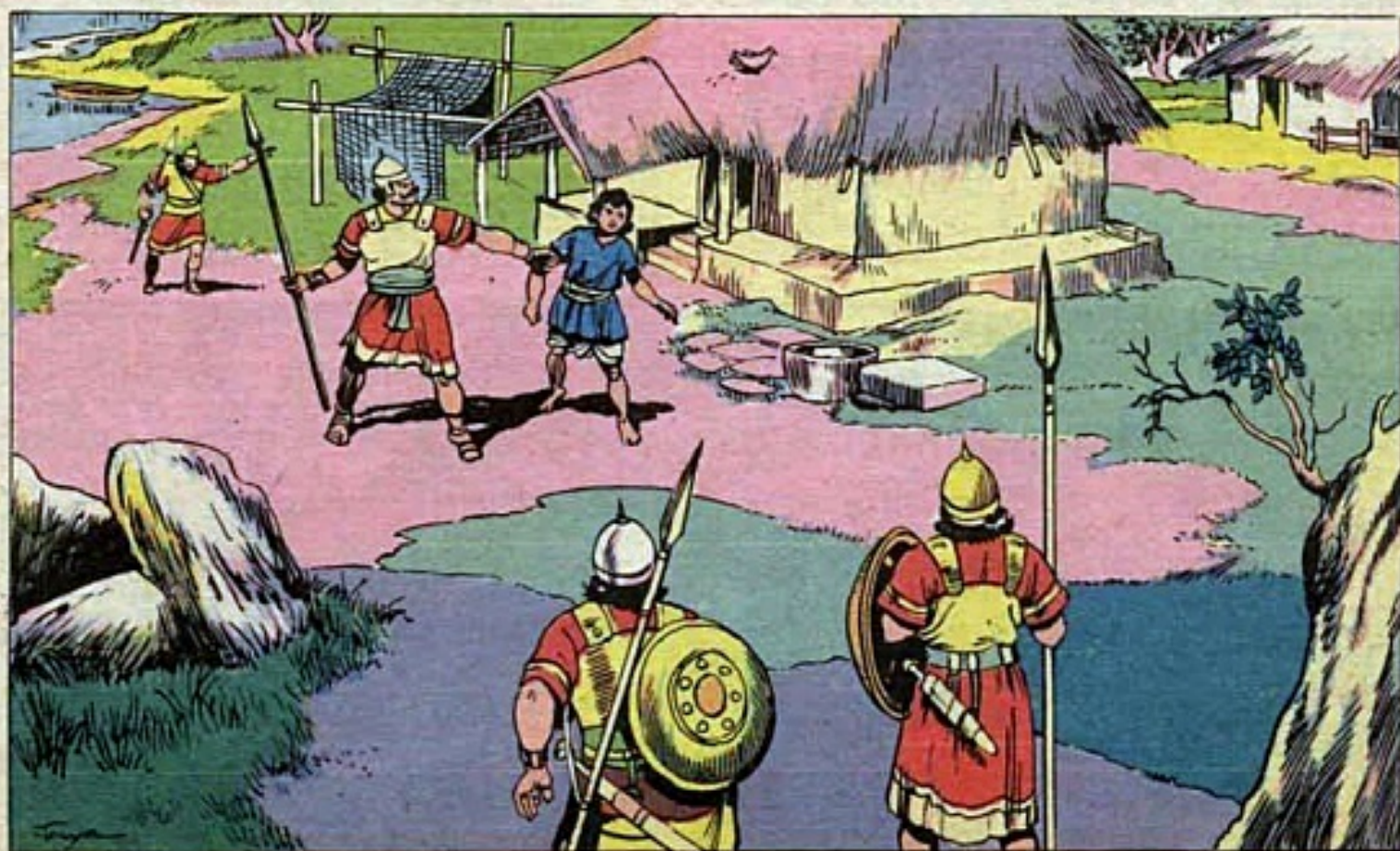
मछुआरे के बेटे ने सारी कहानी कह सुनाई। बुढ़िया ने गरदन हिलाते हुए कहा- "मैंने भी ढिंढोरे पर राजा की यह घोषणा सुनी थी। यह घोषणा ही रानी के प्रश्न का उत्तर है। इसमें अधिक सोचने-विचारने या चिन्ता करने की क्या जरूरत है ?"

मछुआरे का बेटा खुशी से उछलता हुआ बोला- "बुढ़िया दादी ! जल्दी से बताओ कि घोषणा ही कैसे रानी के प्रश्न का उत्तर है।"

"राजा पूरे राज्य पर हुकूमत करता है लेकिन राजा पर हुकूमत चलती है रानी की। यह इस घोषणा से साफ़ ज़ाहिर है। और इसी बात को साबित करने के लिए रानी ने यह प्रश्न किया है।" इतना कह कर बुढ़िया लाठी टेकती हुई जाने लगी। लेकिन मछुआरे का बेटा दौड़ता हुआ उसके पास आया और चिल्लाता हुआ बोला- "दादी, दादी ! फिर से बताना, मुझे ठीक से समझ में नहीं आया।"

"अरे पगले ! देखता नहीं है कि राजा रानी के प्रश्न को लेकर कितना परेशान है और रानी मन ही मन खुश हो रही है। पति पर हुक्म चलाने में स्त्री को जितनी खुशी होती है, उतनी किसी चीज़ से भी नहीं। समझे ?" इतना कह कर बुढ़िया लाठी पटकती हुई चली गई।

दूसरे दिन राज दरबार से मछुआरे को बुलावा आया। राजा ने प्रश्न दुहरा कर इसका उत्तर जानना चाहा। मछुआरे ने बड़ी शान्ति के साथ उत्तर दिया- "अपने पति पर हुक्म चलाना ही नारी को सबसे अधिक प्रिय है।"

राजा अविश्वास करते हुए बोले- "नहीं, यह उत्तर सही नहीं हो सकता।"

"इसकी जाँच रानी से ही करवा लें तो बड़ी कृपा होगी। घोषणा में भी आपने यही कहवाया था कि उत्तर का फ़ैसला रानी करेंगी।" मछुआरे ने बड़े आत्म-विश्वास के साथ कहा।

राजा ने रानी की ओर देखकर संकेत से मछुआरे के उत्तर के बारे में अपना विचार प्रकट करने को कहा। रानी ने उत्तर में मुस्कुरा कर सिर्फ़ सिर हिला दिया। राजा ने मछुआरे को दुगुना इनाम देने का हुक्म दिया, क्यों कि उस दिन राजा ने नारी के स्वभाव के बारे में उससे एक नये रहस्य का ज्ञान प्राप्त किया था।

अक्ल बड़ी कि भैंस

राम शरण गुप्त को अपने पिता से सिर्फ़ एक बीघा ज़मीन मिली थी । कठिन परिश्रम और बुद्धि द्वारा उसने कुछ ही वर्षों में पचीस बीघे ज़मीन बना ली । उसके बाद खेती के साथ-साथ व्यापार भी शुरू कर दिया । भाग्य ने साथ दिया और इस प्रकार कुछ ही वर्षों में वह लखपति बन बैठा ।

राम शरण ने बड़ी लगन और पसीने से, आधा पेट खा-खा कर इतना धन जोड़ा था । इसलिए खर्च करने में बहुत सावधानी रखता था । साथ ही साथ, वह हर चीज़ की क़ीमत पैसे से लगाता ।

इसके इस स्वभाव की चर्चा न सिर्फ़ महावत पुर में, बल्कि दूर-दूर के गाँवों में भी काफी होती थी ।

राम शरण गुप्त के पुत्र का विवाह उसी ज़िले में परमेश्वर पुर के प्रतिषिठत सेठ श्री किशन लाल की पुत्री के साथ तय हुआ । इस सम्बन्ध से उसे बड़ी खुशी हुई क्यों कि इसके कारण उसे समाज में प्रतिष्ठा मिलने लगी । विवाह की तैयारियाँ बड़े पैमाने पर की गईं और यह बड़ी धूमधाम से सम्पन्न हुआ । विवाह के बाद उसने सहयोग देनेवाले कर्मचारियों को भारी इनाम देकर खुश करना चाहा ।

सबसे पहले मंगल वाद्य का शहनाई वादक सामने आया । यह शहनाई का बहुत ही प्रसिद्ध कलाकार थाा । लेकिन राम शरण ने इसे कुछ भी इनाम दिये बिना वापस भेज दिया और बाद में आने को कहा । और इशारे से श्रुति मिलाने वाले को बुलाकर कहा- "तुमने कितनी देर तक सांस रोक कर श्रुति मिलाया होगा । तुम्हारे कठिन परिश्रम के लिए जितना भी इनाम दिया जाये, कम है । फिर भी मेरी ओर से एक सौ रुपये रख लो ।"

इसके बाद राम शरण ने ढोलक बजाने वाले को बुला कर कहा- "ढोलक बजाते-बजाते

सुधीर राय

तुम्हारा शरीर पसीने से तर बतर हो गया है। तुमने सचमुच बहुत परिश्रम किया है।" इतना कह कर उसने ढोलक वाले को वस्त्र के साथ पचहत्तर रुपये बतौर इनाम दिये।

फिर ताल देने वाले के परिश्रम की प्रशंसा करते हुए राम शरण ने उसके हाथ पर पचास रुपये रख दिये।

अन्त में शहनाई वादक की ओर असन्तोष से देखते हुए रामशरण बोला- "कठिन परिश्रम से भागने वाले जीवन में कभी भी आगे नहीं बढ़ते। तुम सिर्फ़ कुछ देर शहनाई बजा कर बीच बीच में बहुत देर तक इधर-उधर ताकते रहे। काम चोर होकर भी गले में सोने का हार और उंगलियों में मूल्यवान अंगूठियाँ पहन रखी हैं। तुम्हारे थोड़े परिश्रम के लिए मैं पचीस रुपये की बहुत अधिक रकम दे रहा हूँ। यह लेते जाओ।"

राम शरण के मुँह से ऐसी बातें सुन कर शहनाई का वह प्रसिद्ध कलाकार हक्का बक्का हो गया। वह रामशरण से भी हर विवाह के मौक़े क समान अधिक इनाम की आशा कर रहा था क्यों कि हर स्थान पर अन्य वादकों से उसे अधिक महत्व दिया जाता था।

यह सारा दृश्य राम शरण के समधी सेठ श्री किशन लाल देख रहे थे। उन्होंने अपने समधी के बारे में जैसा सुना था, वैसा ही देखा भी। वे मुस्कुराते हुए बोले- "समधी साहेब! आप हर चीज़ की क़ीमत पैसों में लगाते हैं, यह उतना बुरा नहीं है जितना कि कला से भी अधिक शरीर की मेहनत को महत्व देना बुरा है। यदि बिना सोचे बिचारे शारीरिक परिश्रम को इतना महत्व देंगे तो पालकी ढोने वाले कहारों को सबसे बड़ा इनाम मिलना चाहिए। लेकिन सबसे अधिक भेंट, इनाम और अपनी कन्या भी वर को क्यों दे रहे हैं जिसने एक तिनका भी नहीं उठाया है।"

अपने समधी साहेब का यह ताना सुन कर रामशरण समझ गये कि शरीर के श्रम से भी अधिक महत्व व्यक्ति की योग्यता का है। अपनी भूल को सुधारने के लिए मंगल वादकों को रामशरण ने फिर से यथायोग्य पुरस्कार दिया।

विष्णु पुराण

महाराज दशरथ ने पुत्रकामोष्टि यज्ञ बिना किसी विध्न-बाधा के पूरा कर लिया। यज्ञ कुण्ड से अग्निदेव खीर का पात्र ले प्रकट हुए और उन्होंने यह पात्र राजा दशरथ को प्रदान किया। दशरथ ने यह खीर आधी-आधी कौशल्या और कैकेयी में बाँट दी।

राजा दशरथ के तीन रानियाँ थीं - कौशल्या, कैकेयी और सुमित्रा।

कौशल्या और कैकेयी ने अपने-अपने हिस्से से थोड़ी खीर सुमित्रा को भी दी।

चैत्र शुक्ल नवमी के दिन कौशल्या के गर्भ से विष्णु नील मेघ कान्ति के साथ श्रीराम के रूप में अवतरित हुए। कैकेयी के गर्भ से विष्णु के शंख और पद्म के अंश लेकर भरत प्रकट हुए। शेषनाग का अंश लेकर स्वर्णिम वर्ण के लक्ष्मण तथा विष्णु के चक्र और गदा के अंश से माणिक कान्ति वाले शत्रुध्न सुमित्रा के गर्भ से पैदा हुए।

चैत्र शुक्ल नवमी को कोशल राज्य भर में रामनवमी के रूप में आनन्दोत्सव मनाये जा रहे थे। इतने में तीसरा चैत्र आ पड़ा। अयोध्या नगर में चक्रवर्ती दशरथ के ज्येष्ठ पुत्र का जन्म दिन बड़ी धूमधाम से मनाया गया।

चैत्र पूर्णिमा की दुधिया चाँदनी रात में दशरथ अपने महल में अपनी रानियों, चारों पुत्रों, मंत्री सुमंत्र, राम को खिलाने वाले राज बंधुओं, तथा अन्तरंग सखा भद्र के साथ मिष्टान्न-भोज करने लगे।

कौशल्या राम को गोद में लिए चंद्रमा को दिखाते हुए खिलाने लगी। राम चाँद को लेने

की ज़िद करने लगे और उसके लिए रोने लगे। उन्हें कई प्रकार से मनाया गया, फिर भी उन्होंने रोना बन्द नहीं किया। इस पर सुमंत्र ने एक आइना मंगवाया और उसमें चाँद बिम्ब दिखाया। तब राम प्रसन्नता के मारे उस आइने में चंद्र तथा अपने को देखते हुए "रामचंद्र" कह कर अपने नन्हें हाथों से तालियाँ बजाने लगे। उस दिन से वे रामचंद्र कहलाये।

इसके बाद भद्र ने राम को गोद में लेकर आइने में दिखाते हुए पूछा- "अब तो बताओ।" तब राम ने उत्तर दिया- "रामभद्र"। इसलिए वे रामभद्र भी कहलाये।

तभी लक्ष्मण, भरत तथा शत्रुध्न रामचंद्र के पास आकर खड़े हो गये। आइने में चाँद का बिम्ब छत्र जैसा दिखाई पड़ रहा था और पूरा दृश्य रामचंद्र के राज्याभिषेक जैसा प्रतीत हो रहा था। दशरथ के आनन्द की कोई सीमा न रही। तीनों माताएँ फूली न समाईं।

राजकुमार धीरे-धीरे बढ़ने लगे। लक्ष्मण छाया की भाँति सदा रामचंद्र के पीछे लगे रहते। उनके पीछे-पीछे भरत और शत्रुघ्न जुड़वें भाई के समान एक साथ खेलते हुए चलते।

वैसे वे चार भाई थे। पर वे सब मिल कर एक सम्पूर्ण रूप में दिखाई देते थे।

चारों राजकुमारों ने ब्रह्मर्षि वसिष्ठ से सारी विद्याएँ सीख लीं। रामचंद्र जी ने छोटी अवस्था में ही समस्त शास्त्र, वेद, वदांग, धर्मसूत्र, योग-रहस्य आदि का ज्ञान प्राप्त कर लिया।

वसिष्ठ ने एक दिन रामचंद्र को समझाते हुए कहा- "रामचंद्र। तुम्हारे वंश का मूल पुरुष सूर्य है, तुम रविराम हो, इक्ष्वाकु वंश के सिरमौर! तुम्हारे पर दादा महात्मा रघु बड़े यशस्वी थे। तुम रघुकुल के चंद्र हो, रघुराम हो।"

महर्षि सूत नैमिशारण्य के मुनियों को जब रामचंद्र का प्रसंग सुना रहे थे तो मुनियों ने इनके पूर्वजों का इतिहास विस्तार से जानना चाहा।

तब महर्षि सूत उन्हें इस प्रकार सुनाने लगे-

"महाकल्प के प्रारम्भ में विवस्वंत नाम से द्युतिमान हुए सूर्य के पुत्र वैवस्वत मनु हुए।

वैवस्वत मनु के इक्ष्वाकु आदि दस पुत्र हुए। वे सब महान चक्रवर्ती हुए और उन सब ने इस पृथ्वी पर हजारों वर्षों तक राज्य किया। उनका वंश बढ़ता गया। इस प्रकार सूर्यवंश विभिन्न शाखाओं में विस्तार पूर्वक फैल गया।

इस वंश ने अनेक शताब्दियों तक इस भूमण्डल पर राज्य किया और जनता को सुखी रखने के साथ वे भी बड़े ही प्रतापी और यशस्वी राजा कहलाए।

इक्ष्वाकु वंश में दिलीप और रघु बड़े ही प्रतापी, धर्मात्म-चक्रवर्ती के रूप में यशस्वी हुए।

महाराजा दिलीप ने सन्तान प्राप्ति के लिए अपने कुल गुरु वसिष्ठ की सलाह माँगी। उनके आदेशानुसार राजा कामधेनु की अंश नंदिनी की बड़ी श्रद्धा-भक्ति के साथ सेवा-अर्चना करने लगे।

एक दिन महाराजा दिलीप नंदिनी को जंगल में चरा रहे थे। नंदिनी चरते-चरते एक गुफा में चली गई। उस गुफा में एक सिंह था। उस सिंह ने नंदिनी को पकड़ लिया। दिलीप ने बाण चला कर सिंह को मारना चाहा, किन्तु उनका हाथ रुक गया।

सिंह ने कहा- "हे राजन! यह गाय मेरे लिए आहार बन कर आई है। आप का मुझे मारना अधर्म होगा। इसीलिए आप के हाथ रुक गये।"

इस पर दिलीप ने कहा- "तुम नंदिनी के बदले मुझे खा लो, किन्तु इसे छोड़ दो।"

राजा के मुख से यह उत्तर पाकर सिंह अदृश्य हो गया।

नंदिनी राजा दिलीप की भक्ति पर प्रसन्न होकर बोली- "महाराज! मैंने ही माया से आप को यह दृश्य दिखाया है। मैं आप की भक्ति की परीक्षा ले रही थी। आप उस परीक्षा में सफल निकले।"

नंदिनी ने राजा को सन्तान-प्राप्ति का वरदान दिया।

महाराजा दिलीप के पुत्र महाराजा रघु हुए।

ये दान वीर के रूप में विख्यात हुए ।

एक बार एक तपस्वी राजा के अतिथि बन कर आये । उनके मन की कामना को भांप कर राजा अपनी रानी को उस तपस्वी के आश्रम में छोड़ आये । तपस्वी ने अपनी गलती मान कर बड़ा पश्चात्ताप किया और भक्ति पूर्वक रानी के चरण-स्पर्श कर उनसे क्षमा मांगी और सादर राजमहल में भिजवा दिया ।

महाराजा रघु ने एक बार दान में दी हुई चीज़ को वापस लेने से इनकार कर दिया । इस पर रानी ने राजा से निवेदन किया कि इससे अच्छा यह है कि आप मेरा सिर काट लें । इस पर रघु ने सचमुच रानी का सिर काटने के लिए तलवार चला दी । किन्तु यह क्या ! तलवार सिर से स्पर्श करते ही फूल बन कर बिखर गई । देवताओं ने उस राज दम्पति की निष्ठा और कर्त्तव्य परायणता पर प्रसन्न होकर उन पर आशीवार्द के रूप में फूलों की वृष्टि की ।

महाराजा रघु ने अपनी सारी सम्पत्ति दान कर दी और अपने लिए एक भी कौड़ी नहीं रखी । दान देने के लिए जब धन न रहा तब धन लाने के लिए कुबेर के पास गये ।

यक्षों ने कुबेर की नगरी अलकापुरी जाने से रघु को रोकने में अपनी सारी शक्ति और माया लगा दी किन्तु रोक न सके ।

कुबेर ने आदर पूर्वक उनका स्वागत किया और उनकी इच्छा के अनुसार धन देकर विदा किया । रघु ने सारा धन याचकों में बाँट दिया ।

महाराजा रघु के पुत्र थे अज । महाराजा अज बड़े शूर, रवीर और पराक्रमी थे ।

एक बार स्वयंवर में भोजराज की पुत्री इन्दुमती ने उन्हें वर लिया । राजा अज इन्दुमती को साथ लेकर चल पड़े । किन्तु स्वयंवर में आये हुए अन्य राजाओं ने उन पर आक्रमण कर दिया । राजा अज ने उन सब को पराजित कर भगा दिया ।

एक दिन राजा अज इन्दुमती के साथ उद्यान में घूम रहे थे । तभी आकाश मार्ग से नारद जी जा रहे थे । अचानक उनकी वीणा से लिपटी

देवलोक की पुष्पमाला हवा में उड़ती हुई वहाँ आई और इन्दुमती के कण्ठ में जा पड़ी। इससे इन्दुमती की उसी घड़ी मृत्यु हो गई।

राजा अज पत्नी की मृत्यु देख शोक में रोने लगे। तभी नारद वहाँ प्रकट हुए तथा राजा को उन्होंने इन्दुमती के पूर्व जन्म की कहानी सुनाई।

एक बार तृणविन्दु ऋषि की तपस्या भंग करने के लिए इंद्र ने हरिणी नामक अप्सरा को भेजा था। इस पर ऋषि ने हरिणी को मानवी जन्म का शाप दे दिया। हरिणी के अनुरोध करने पर ऋषि ने शाप से छूटने का उपाय भी बता दिया।

स्वर्ग की पुष्पमाला के उसके कण्ठ में पड़ते ही इन्दुमती को सुरबाला होने की याद हो आई। इसीलिए वह मानव शरीर छोड़कर देवलोक वापस चली गई।

राजा अज के पुत्र थे-दशरथ। ये देवासुर संग्राम में देवताओं की सहायता करने के लिए जाया करते थे।

एक बार वे इंद्र की सहायता करने के लिए शंभरासुर से यद्ध करने चल पड़े। राजा दशरथ के साथ कैकेयी भी युद्ध में चली गई। युद्ध करते समय दशरथ के रथ का पहिया निकला जा रहा था। कैकेयी ने अपनी उंगली को धुरी में डाल कर पहिये को रथ से निकलने से बचा लिया। रानी की वीरता से प्रसन्न होकर राजा दशरथ ने उसे दो वर देने का वचन दिया।

पर कैकेयी ने कहा था कि समय आने पर मैं अवश्य मांग लूंगी।

राजा दशरथ शब्द भेदी बाण चलाने में दक्ष थे। एक बार ये प्रजा की फसलों को नष्ट करने वाले जंगली हाथियों का शिकार करने निकले। तभी उस अन्धेरी रात में श्रवणकुमार अपने प्यासे अन्धे माता-पिता के लिए कमण्डल से जल लेने एक जलाशय पर गये। कमण्डल से जल लेने की आवाज़ सुन कर राजा दशरथ को यह शक हुआ कि फसल नष्ट करने वाले हाथी जलाशय पर पानी पी रहे हैं।

दशरथ ने तुरंत आवाज़ की दिशा में तीर

छोड़ दिया। तीर ठीक निशाने पर लगा और श्रवणकुमार घायल होकर चीखने-तड़पने लगा।

श्रवणकुमार की चीख सुनकर राजा दशरथ चौंक गये और शीघ्र ही दौड़ कर उसके पास पहुँचे। दशरथ उसे बचा न सके। मरते हुए श्रवण कुमार ने दशरथ से अपने प्यासे माता-पिता को जाकर जल पिलाने का अनुरोध किया। उन्होंने उन्हें पहले जल पिलाया, फिर दुर्घटना की सारी कहानी सुना दी।

पुत्रशोक में बिलखते हुए श्रवणकुमार के माता-पिता ने शाप देते हुए कहा- "हे दशरथ! आप भी मेरे ही समान पुत्र के शोक में अपने प्राण छोड़ेगे।" इतना कह कर मुनि दम्पति ने अपने प्राण त्याग दिये।

सूर्यवंशी राजाओं में शरणागत की रक्षा के लिए राजा शिवि विशेष रूप से विख्यात हुए। राजा शिवि की परीक्षा लेने के लिए इंद्र कबूतर तथा अग्निदेव बाज बन कर इनके पास एक बार आये। बाज कबूतर पर झपट रहा था और कबूतर रक्षा के लिए शरण ढूँढ रहा था। तभी कबूतर शरण लेने के लिए राजा शिवि की जांघ पर जा बैठा। राजा शिवि ने उसे रक्षा का वचन देते हुए बाज से कहा- "कबूतर अपनी प्राण-रक्षा के लिए मेरी शरण में आया है। अतः इसकी रक्षा करना मेरा धर्म है। लेकिन, साथ ही, मैं तुम्हारा आहार छीनना नहीं चाहता। इसलिए हे बाज, तुम इस कबूतर के वजन के बराबर मेरी जांघ का माँस खा लो।"

बाज ने राजा शिवि की बात मान ली। तराजू मंगाया गया। एक पलड़े पर कबूतर बैठ गया और दूसरे पर राजा शिवि अपनी जांघ का मांस काट काट कर चढाने लगे। दोनों जांघों का मांस चढ़ाने पर भी कबूतर का वजन भारी ही रहा। तब राजा शिवि ने तराजू पर बाज के भोजन के लिए अपनी पूरी देह चढ़ा दी।

राजा शिवि के त्याग और दानवीरता पर प्रसन्न हो इंद्र और अग्नि अपने असली रूप में आ गये और उन्हें अनेक वर दिये।
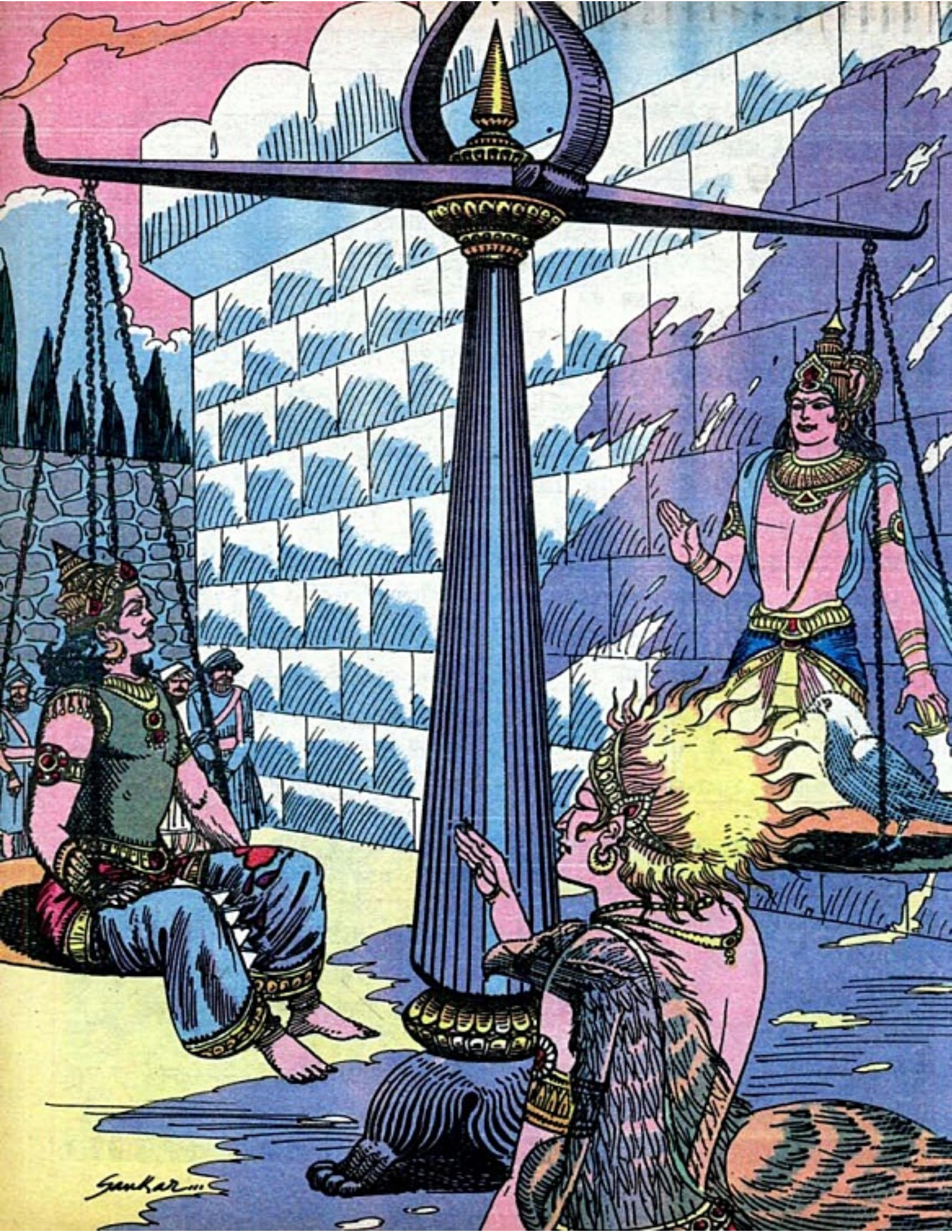
क्षत्रिय होकर भी घोर तपस्या द्वारा वसिष्ठ के समान ही ब्रह्मर्षि पद पानेवाले विश्वामित्र भी सूर्य वंश के एक समय बड़े प्रतापी राजा थे।

इसी वंश में महान राजर्षि परम विष्णु भक्त राजा अम्बरीष हुए। लक्ष्मी स्वयं इनके घर में इनकी पुत्री के रूप में अवतरित हुईं।

इनका नाम पड़ा-श्रीमती। श्रीमती बचपन से ही विष्णु को अपना पति मान कर इनकी आराधना करने लगी। अपने मोहक रूप और सौन्दर्य के लिए वह तीनों लोकों में प्रसिद्ध थीं।

श्रीमती का जन्म एक विशेष उद्देश्य को लेकर हुआ था।

देवर्षि नारद को एक बार यह गर्व हो गया कि मैं मोह-माया से परे हूँ। मुझ पर इसका कोई प्रभाव नहीं पड़ सकता। पर्वत नाम के एक ऋषि नारद के साथ तीनों लोकों का भ्रमण किया करते थे। एक बार नारद ने अपने इस गर्व की चर्चा पर्वत से भी की।

एक बार घूमते-घूमते नारद और पर्वत दोनों ऋषि राजा अम्बरीष के यहाँ पधारे। राजा ने उनका यथोचित आदर-सत्कार किया और अपनी पुत्री श्रीमती को आशीर्वाद देने की प्रार्थना की।

जब श्रीमती ने आशीर्वाद लेने के लिए दोनों ऋषियों को प्रणाम किया, तभी उन दोनों पर विष्णु की माया छा गई। वे दोनों श्रीमती का सौन्दर्य देख कर सारा ज्ञान भूल गये और उससे विवाह करने को दोनों आपस में लड़ने लगे।

राजा अम्बरीष को ऋषियों के इस व्यवहार पर बड़ा आश्चर्य और दुख हुआ। श्रीमती के अनुरोध पर अम्बरीष ने उसके विवाह के लिए स्वयंवर की घोषणा कर दी। स्वयंवर की घोषणा सुन कर दोनों ऋषि वहाँ से चले गये।

स्वर्ग में वापस जाकर भी नारद श्रीमती को भूल न सके और उससे विवाह करने के लिए विष्णु से अपना सुन्दर रूप देने की प्रार्थना की।

इधर पर्वत ईर्ष्यावश विष्णु से यह अनुरोध करने आया कि स्वयंवर में जाने के लिए वे नारद को बन्दर का मुख दे दें जिससे श्रीमती उसका वरण न कर सके। विष्णु ने पर्वत की यह बात मान ली।
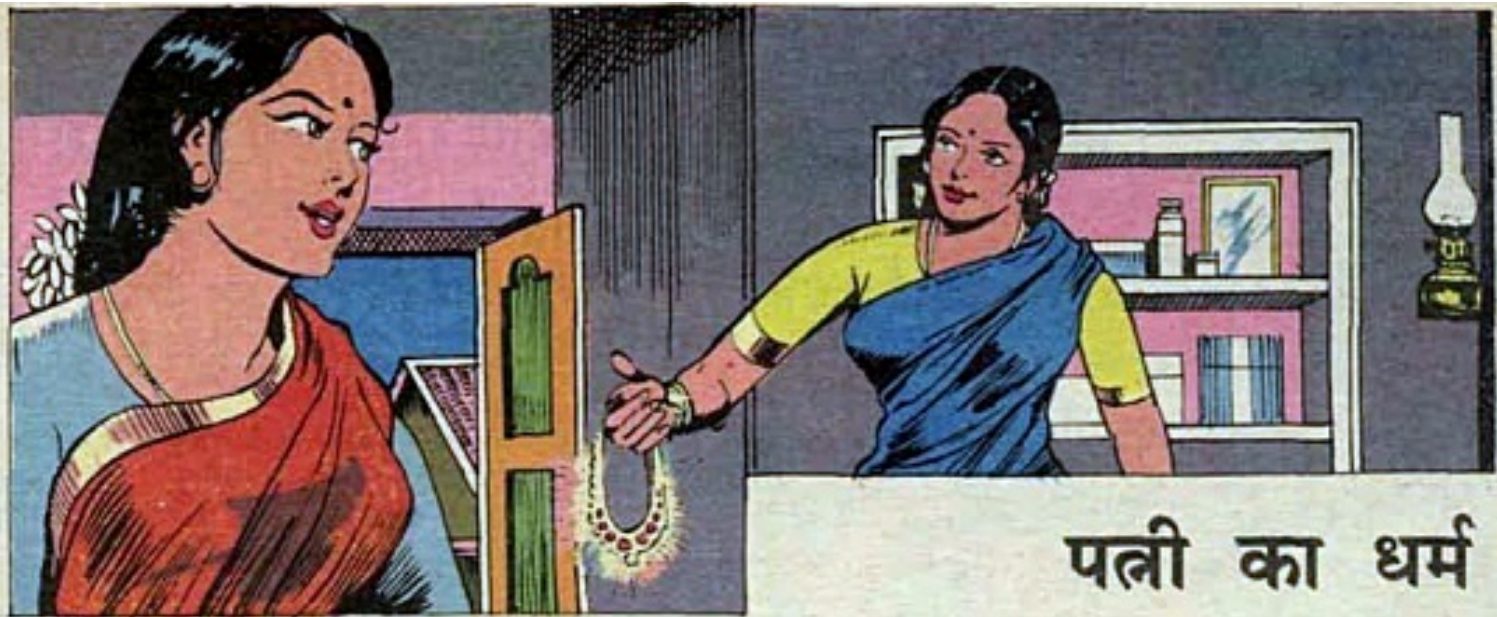
पत्नी का धर्म

अहल्या रसोई बना कर रसोई घर से बाहर निकल रही थी। तभी किसी ने दरवाज़ा खटखटाया। अहल्या ने सोचा, शायद उसके पति आ गये हैं। उसने जल्दी से किवाड़ खोले किन्तु वहाँ उसके पति नहीं, पड़ोसिन जानकी बाई खड़ी थी।

अहल्या को देखते ही जानकी बोली- "रसोई बना चुकी थी, इसलिए थोड़ा समय काटने तुम्हारे पास चली आई।"

अहल्या का पति दो दिनों से शहर गया हुआ था और वह भी अकेली ऊब रही थी। इसलिए जानकी को देख कर वह बहुत प्रसन्न हुई और उसे अन्दर बुलाती हुई बोली- "अच्छा हुआ, तुम आ गयी। मुझे तो अकेलापन काटने दौड़ता है। दो दिन हो गये, वे अभी तक शहर से लौटे ही नहीं।"

दोनों मकान के बिचले कमरे में बैठी बहुत देर तक दुनियादारी की बातें करती रहीं। यहाँ तक कि शाम हो गयी। अहल्या ने दिया जलाया। जानकी बाई ने अपने कण्ठ का हार निकाल कर दिये की रोशनी में अहल्या को दिखाते हुए कहा- "मेरे पति इसे मेरे लिए शहर से बनवा कर लाये हैं। देखो तो, कैसा है?"

माणिक्य जड़ा हुआ वह हार दिये की लौ में दमक रहा था। अहल्या ने उसे अपने हाथ में लेकर उलट-पुलट कर देखा। फिर बोली- "यह हार बहुत सुन्दर है और कुछ नये प्रकार का है। मेरे पतिदेव कह गये हैं कि यदि उनका काम बन गया तो मेरे लिए सोने की चूड़ियाँ बनवा कर लायेंगे। आज रात तक वे जरूर लौट आयेंगे। मैं उनसे कहूँगी कि वे चूड़ियों के बदले इसी नमूने का हार बनवा कर ला दें। आज तुम इस हार को मेरे पास छोड़ जाओ, कल सवेरे तुम्हें लौटा दूँगी।"

जानकी बाई हार छोड़कर अपने घर चली गई। अहल्या कुछ देर तक हार को उलट-पुलट

कर देखती रही । फिर उसे सन्दूक में छिपा कर रख दिया । उसने काफी रात तक पति का इन्तजार किया । अन्त में, अकेली खाना खाकर आगे-पीछे के सभी दरवाज़े ठीक से लगा कर सो गई ।

सवेरे उठते ही पीछे का दरवाज़ा खुला देख वह चौंक पड़ी । बरामदे में सन्दूक की चीज़ें बिखरी हुई देख वह और भी घबरा गई और उसे चोरी का शक हुआ । सन्दूक की चीज़ों की पड़ताल करने पर पता चला कि सौ रुपये, सोने का कर्णफूल और जानकी बाई का हार भी गायब है । वह चीख-चीख कर रोने लगी ।

चोरी की खबर मिलते ही पड़ोस की सभी स्त्रियाँ और मर्द इकट्ठे हो गये । सबने अहल्या के प्रति सहानुभूति प्रकट की ।

जानकी बाई ने अहल्या को अलग ले जाकर पूछा कि उसका हार तो बचा हुआ है न ? अहल्या की सूरत देख कर वह समझ गई कि उसका हार भी चोर ले गया । इसलिए वह भी साथ में रोने लगी ।

अहल्या ने जानकी को समझाया- "इस समय तुम कोई बखेड़ा खड़ा न करो । पति के आने पर तुम्हारे हार का कोई न कोई इन्तज़ाम जरूर करवा दूँगी ।"

"दो चार दिनों में ही मेरी ननद की शादी है । उस समय तक मुझे यह हार जरूर मिलना चाहिए । नहीं तो मेरे पति मेरी जान ले लेंगे । कह रहे थे, यह पूरे दो हजार का है ।" जानकी बोली । इसी समय अहल्या का पति कमल मिश्र शहर से वापस आ पहुँचा और घर के पास भीड़ देख कर आश्चर्य के साथ पूछा- "क्या बात है ? यहाँ लोगों की भीड़ क्यों लगी है ?"

अहल्या ने उसी रोनी सूरत में चोरी का सारा हाल पति को कह सुनाया, लेकिन जानकी बाई के कण्ठहार के बारे में चुप रही । जब पड़ोस के लोग चले गये तब कमल मिश्र ने पत्नी को डाँटते हुए कहा- "तुम कैसे सोयी थी, कि तुम्हें चोरी का पता ही न चला ?"

इस पर अहल्या गुस्से में चीखती-चिल्लाती बोली- "एक तो तुम खुद ही रात को घर से गायब रहते हो, और जब चोरी हो गई तो मुझ पर रोब डाल रहे हो ! मैं औरत जात जाग कर

भी क्या कर लेती ? तुम्हें इतना भी ख्याल है कि मैं घर में अकेली रहती हूँ। यह चोरी तुम्हारी वजह से ही हुई है ।"

पत्नी के डाँटने पर कमल मिश्र शान्त हो गया और उसने पत्नी को भी धीरज बँधाया कि चलो कोई बात है। तुम्हारे लिए और गहने आ जायेंगे ।

पति को खुश देख कर अहल्या ने जानकी बाई के हार के बारे में भी बता दिया और कहा कि दो-चार दिनों में ही यदि ऐसा ही हार उसे न लौटाया तो यह बात घर-घर फैल जायेगी और गाँव में हम सब की नाक कट जायेगी ।

कमल मिश्र को विश्वास नहीं हुआ कि जानकी का कंजूस पति उसे इतना महँगा हार देगा। इसलिए उसने अहल्या से कहा- "वह हार जरूर नकली होगा- सोने का पानी चढ़ा हुआ। दस-दस रुपये में शहर की हर गली में मिल जाता है । मैं कल ही ला दूँगा ।"

अहल्या यह सोच कर चुप रही कि जानकी को ननद की शादी में पहनने के लिए कैसा भी हार मिल जाये तो कुछ दिनों के लिए बात शान्त हो जायेगी । बाद में देखा जायेगा !

दूसरे दिन कमल मिश्र शहर जाकर ठीक वैसा ही हार ले आया। वह भी सोने की तरह चमक रहा था और उसमें मानिक जड़े हुए थे। अहल्या वैसा ही हार देख कर बहुत प्रसन्न हुई और उसे देने के लिए तुरत जानकी बाई के घर चली गई ।

जानकी ने हार को लेते ही कहा- "यह तो वही हार है, जो मैंने तुझे दिया था, हुबहू वही। आज के ज़माने में खोया माल मिलता नहीं । यदि मिल जाये तो समझना चाहिए कि खोये प्राण वापस आ गये ।"

इस पर अहल्या हँसती हुई बोली- "यह असली नहीं, नकली हार है। तुम्हारे हार की तरह असली सोने का हार तो फिर कभी बनवा कर दूँगी। अभी ननद की शादी में इससे काम चला लो ।" जानकी बाई ने हार को कंठ में डालते हुए कहा- "चाहे यह नकली हो या असली, है यही हार मेरा । तुम्हारे पति का असली रूप क्या है, यह दिखाने के लिए मैंने तुझ से थोड़ा कठोर व्यवहार किया है। लेकिन

इससे तुम्हारा ही लाभ होगा ।''

जानकी बाई की बातें अहल्या को बिल्कुल समझ में नहीं आईं । वह हैरानगी से जानकी की ओर ताकती हुई बोली- ''मेरे पति का असली रूप क्या है ?''

''बात यह है अहल्या !'' जानकी ने समझाना शुरू किया । ''तुम्हारे घर में चोरी की कारिस्तानी तुम्हारे पति की है । तुम्हारे घर में बाहर से चोर नहीं आया ।''

''तुम मेरे पति पर इलज़ाम लगाती हो ? भला वे अपने घर में क्यों चोरी करेंगे ?'' अहल्या गुस्से में बोली ।

''अच्छा, तुम्हें यह मालूम है कि तुम्हारे पति रोज़ शहर क्यों जाते हैं !'' जानकी ने पूछा ।

''वे यह तो मुझे नहीं बताते । सिर्फ़ इतना मुझसे कहते हैं कि शहर में काम है ।'' अहल्या ने सरलता पूर्वक कहा ।

''लेकिन मुझे सब मालूम है । वे रोज़ शहर जुआ खेलने जाते हैं । जिस रात तुम्हारे घर चोरी हुई, मैंने उन्हें तुम्हारे घर के बाहर अन्धेरे में कुछ टटोलते देखा था । रात में आहट पाकर नींद खुल गई थी और जब खिड़की खोल कर बाहर देखा तो उन पर नज़र पड़ गई थी । तुम्हारे पति को पहचान कर मैं चुप रही । लेकिन जब सुबह पता चला कि वे रात को आये नहीं और तुम्हारे घर चोरी भी हो गई तो मेरे आश्चर्य का ठिकाना न रहा । आज उसी हार को वापस आया देख मेरा विश्वास पक्का हो गया । वैसे यह हार भी सचमुच सोने का नहीं है, फिर भी मानिक जड़े हुए सभी हार एक दम एक ही तरह के कभी नहीं हो सकते ।'' अहल्या इस पर सिर पीटती हुई बोली- ''मुझे तो अब भी विश्वास नहीं होता कि मेरे पति ऐसा कर सकते हैं ।''

''मेरे पति ने खुद अपनी आँखों से तुम्हारे पति को जुआ खेलते देखा है । अब भी समय है चेतने का । देखते नहीं हो, तुम्हारे पति पर हर रोज़ कर्ज़ बढ़ता जा रहा है ।'' जानकी ने कहा ।

अहल्या सिसकती हुई बोली- ''तुमने मेरी आँखें खोल दी हैं जानकी बहिन ।'' और इसके बाद अपने घर चली गई ।

अपनी पत्नी को देख कर कमल मिश्र ने

पूछा- "जानकी ने हार के बारे में क्या कहा ?"

लेकिन अहल्या ने कोई उत्तर नहीं दिया। वह अपने कमरे में चली गई और बिस्तर पर लेट कर बच्चों की तरह फफक-फफक कर रोने लगी। कमल मिश्र के बहुत आग्रह करने पर वह कहने लगी- "हाय ! मेरा भाग्य फूट गया ! मेरा पति जुआरी और चोर निकल गया। हाय ! अब मैं क्या करूँ ! ज़हर खा लूँ या कुएं में कूद जाऊँ !" इतना कहते कहते वह अचानक उठी और अपने कपड़े समेटने लगी।

कमल मिश्र को काटो तो खून नहीं। उसे ऐसी स्थिति की आशा न थी। उसे समझ में नहीं आ रहा था कि वह करे तो क्या करे।

सबसे बड़ा आश्चर्य तो उसे इस बात का था कि अहल्या को असलियत कैसे मालूम हुई ! स्थिति को नाजुक होते देख उसने अपनी कमजोरी को मान लेने में ही भला समझा। इसलिए अपनी पत्नी से क्षमा माँगते हुए उसने कहा- "मैंने अब समझ लिया है कि जुआ किस हद तक इनसान को नीचे गिरा सकता है। जुए के कारण इनसान अपने ही घर में चोरी कर सकता है, अपनी पत्नी से छिपाने के लिए हजारों झूठ बोल सकता है, कर्ज़ की खाई में डूब सकता है, समाज की नज़रों में गिर सकता है और इस तरह दिन-रात मौत के साये में पलता है। मैं अब क़सम खाता हूँ कि यह पाप कभी नहीं करूँगा। मुझे क्षमा कर दो और मुझे छोड़ कर कहीं न जाओ।" इतना कहते हुए कमल मिश्र ने पत्नी का हाथ पकड़ते हुए उससे रुक जाने का अनुरोध किया।

अपने पति को अपनी गलतियों के लिए पछताते देख उसे दया आ गई और उसने अपने कपड़े वापस रख दिये।

कमल मिश्र ने पत्नी के प्रति कृतज्ञता प्रकट करते हुए कहा- "मैं सचमुच बहुत भाग्यशाली हूँ कि तुम जैसी योग्य पत्नी मिली। तुमने मुझे कुमार्ग से हटा कर सच्चा मार्ग दिखाया है।"

"यह तो मेरा धर्म है। इसमें मेरा कोई बड़प्पन नहीं है।" अहल्या ने मुस्कुराते हुए कहा।

फोटो-परिचयोक्ति-प्रतियोगिता :: पुरस्कार ५०)

पुरस्कृत परिचयोक्तियाँ दिसम्बर १९८३ के अंक में प्रकाशित की जायेंगी।

M. K. Rao

M. Natarajan

★ उपर्युक्त फोटो की सही परिचयोक्तियाँ एक शब्द या छोटे वाक्य में हों। ★ अक्तूबर १० तक परिचयोक्तियाँ प्राप्त होनी चाहिए। ★ अत्युत्तम परिचयोक्ति को (दोनों परिचयोक्तियों को मिलाकर) ५० रु. का पुरस्कार दिया जाएगा। ★ दोनों परिचयोक्तियाँ केवल कार्ड पर लिखकर निम्न पते पर भेजें: **चन्दामामा फोटो-परिचयोक्ति-प्रतियोगिता, मद्रास-२६**

अगस्त के फोटो - परिणाम

प्रथम फोटो : दोस्त का सहारा !
द्वितीय फोटो : प्यार का नजारा !!

प्रेषिका : कु. आशालता गुप्ता, C/o. जी. आर. डी. गुप्ता, म. नं. २, छत्रसालपुर, ललितपुर. पुरस्कार की राशि रु. ५० इस महीने के अंत तक भेजी जाएगी।

क्या आप जानते हैं? उत्तर

१. मेगास्थनिज–भारत के सम्राट चंद्रगुप्त के दरबार में इन्हें राजदूत बना कर भेजा था यूनान के राजा सेल्यूकस निकोटार ने। २. सैरस (ईसा पूर्व ५५८-५३०) ३. डेरियस (ईसा पूर्व ५२२-४८६) ४. पांडिचेरी के दक्षिण में स्थित सेंट डेविड दुर्ग और मदरास में स्थित सेंट जार्ज दुर्ग। ५. नेपोलियन।

Printed by B. V. REDDI at Prasad Process Private Ltd., and Published by B. VISWANATHA REDDI for CHANDAMAMA CHILDREN'S TRUST FUND (Prop. of Chandamama Publications) 188, Arcot Road, Madras-600 026 (India). Controlling Editor: NAGI REDDI.

चन्दामामा
अगला अंक
दीपावली-विशेषांक
★ अधिक पृष्ठों में
★ अतिरिक्त कहानियों के साथ
★ आकर्षक विभिन्न वर्ण-चित्रों से पूर्ण
★ हृदयस्पर्शी मुखचित्र के साथ
मनोमुग्धकारी रूप में प्रकाशित होने
जा रहा है ।
★ मूल्य : २-५०
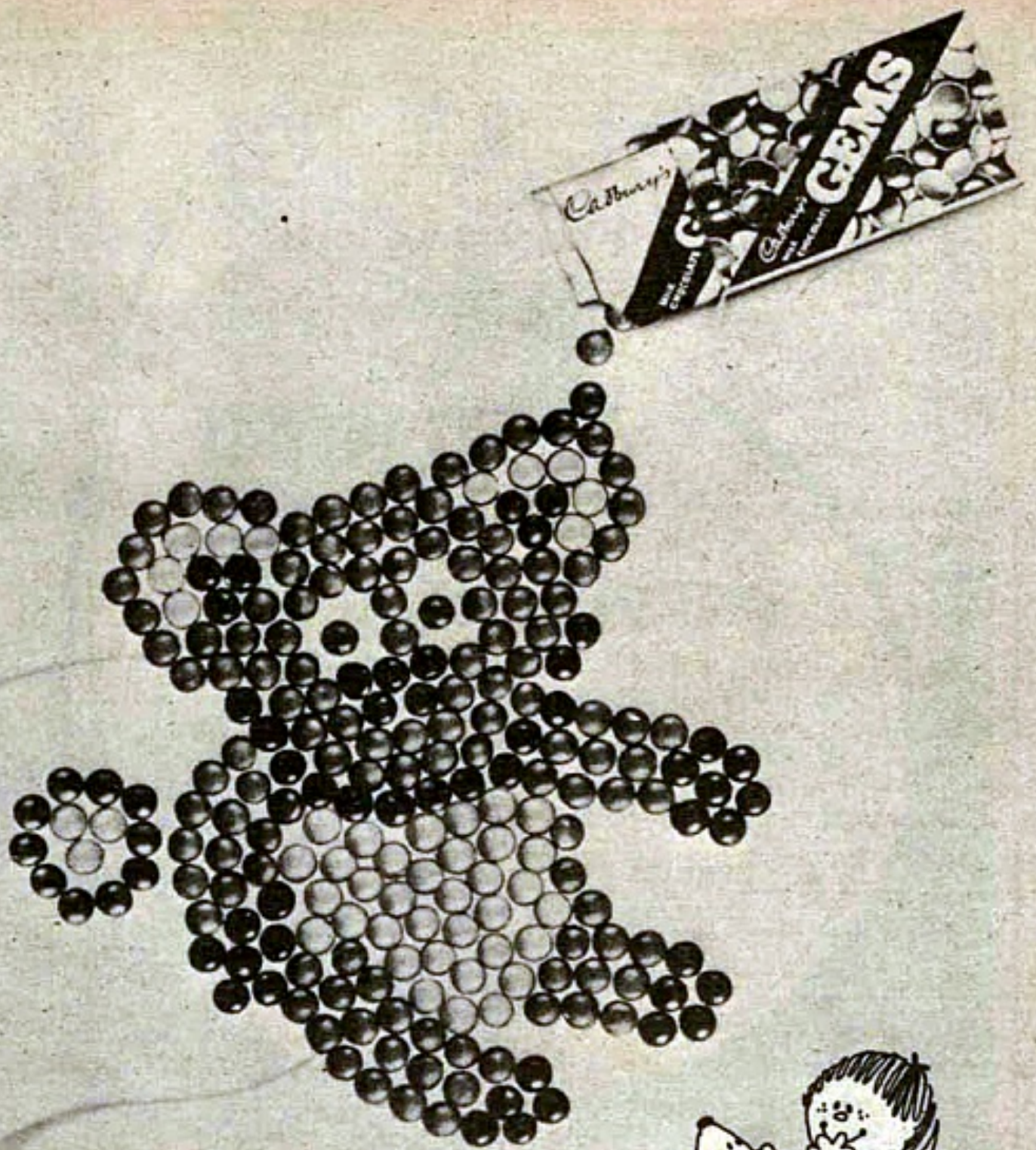
Cadbury's
GEMS
मेरा भालू मेरा भालू, हम इसको कहते हैं लालू
मेरे संग यह ताल मिलाए, ठुमक ठुमक कर नाच दिखाए
खुश हो इसको गले लगाऊं
जॅम्स से जम कर इसे सजाऊं
कितना सुन्दर सपना...झट ले लो जॅम अपना!
कॅडबरिज़
चॉकलेट्स
कॅडबरिज़ जॅम्स हैं ही ऐसे; मीठे मीठे सपनों जैसे!
SM/7915/HN

CHANDAMAMA [Hindi] OCTOBER 1983 Regd.No.M. 5452